वर्ष 27 अंक 11 नवम्बर – 2025 ₹ 3

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी

शबरी

SHABARI SIKSHA SAMACHAR शिक्षा समाचार

अहिन्दी भाषा प्रदेश तमिलनाडु के सेलम से 26 वर्षों से निरंतर प्रकाशित एक मात्र मासिका

मूर्क नायनार भक्त, अन्नदान किए नित ।
भरपेट खिलाकर सतत, पाए अतुल शिव पद ।।

visit us @ www.shabari.org

PRAVEEN UTTARARDH

Just ₹**540/-** *Only*

Planned and perfect presentation.
Impressive and easy language.
Presents the Language in its own way.
Perfect companion for Students.
Prefer Shabari Guides.
Feel the difference.
Finest way to pass the exams with confidence.

SHABARI SHABDHA SAAGAR

Trilingual Dictionary

ஹிந்தி
ஹிந்தி
ஆங்கிலம்
தமிழ்
அகராதி

1632 Pages

Just ₹**750.00** Only

51,000 Words

கற்போர் கற்பிப்போரின்
சொல் வளம் பெருகிட
ஹிந்தியோடு தமிழும் ஆங்கிலமும்
தங்களின் நுனி விரலில் தவழ்ந்திட
51,000 சொற்களின் அணிவகுப்பு
சபரியின் தரமானதோர் படைப்பு

வாழ்க்கை பயனுற வானம் வசப்பட
வார்த்தைகளால் வளம் பெற்று சிறந்திட

शबरी परिवार के विद्या-उत्सव

शबरी शिक्षा संस्थान, सेलम

हर घर में हिन्दी हर मन में हिन्दी को स्थान देने के उद्देश्य से हिन्दी की सेवा में शबरी शिक्षा संस्थान निरंतर कार्य कर रहा है । विद्यालय में तथा अन्य माध्यमों से हिन्दी सीखनेवाले विद्यार्थियों तथा शिक्षकों की सहायता के लिए हम विभिन्न रूप से काम कर रहे हैं ।

शबरी के महत्वपूर्ण कार्यों में वाणी विकास परीक्षाओं का अपना अलग स्थान है । हिन्दीतर प्रदेश में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने में हम अत्यधिक हर्ष का अनुभव कर रहे हैं । वाणी विकास परीक्षा के आठों स्तरों में उत्तीर्ण छात्रों का उत्साह बढ़ाने का काम करनेवाले हैं ।

अत्यधिक खुशी के साथ हम आप सबको बताना चाहते हैं कि शबरी वाणी विकास परीक्षाओं का प्रथम पदवीदान समारोह नवम्बर महीने के 30 तारीख को सेलम जिले में विशिष्ट रूप से संपन्न होनेवाला है ।

शबरी परिवार के इस विद्या-उत्सव में पदवीदान समारोह के प्रतिभागी सस्नेह आमंत्रित हैं ।

इस अंक में

अनमोल वचन 6
संपादक की कलम से 7
क्यों नहीं ? 8
संस्कार : भारतीय सभ्यता की आत्मा 10
कार्तिक पूर्णिमा का पावन पर्व.... 12
हिन्दी 14
शरद पूर्णिमा 15
घूँघट 16
यह भी प्रदूषण ही है 17
सौगंध तुम्हे श्रीराम की... 18
लघु-आलेख 19
किलकारी........................ 20
छद्म 21
बेटियों से मत छीनो............. 22
हर पल है अनमोल 23
भविष्य का धुंध.................. 24
भारतीय रेल 25
महान संत शिव भक्त-तमिल नायनमार 28
मन का न्यायालय 30
वो शख़्स दर्पण था 30
अहमक 31
क्या है ? 32
माँ तेरी महिमा महान है 33
संबंधों की बगिया................ 33
दीप पर्व 34
जोकर 34
सब तोड़ अपनी राह चले 35
ग़ज़ल 35
मानव जीवन सर्वोत्तम 36
बचपन 36
बच्चे बन जाएँ 37
जीवनसाथी तुझे प्रणाम 37
तुम बहुत ही याद आए 38
भगवान 38
नवगीत 39
क्यों न अज्ञानता को मिटाएँ 39
तो अच्छा लगा 40
पाठकों के पत्र 40
नवांकुर 42
आत्मविश्वासः 44
தமிழமுது 45
அருள் உலா 46

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
ஜனவரி-2026	25-01-2026	01-10-2025 to 30-11-2025	05-12-2025
ஏப்ரல்-2026	19-04-2026	01-01-2026 to 28-02-2026	05-03-2026
ஜூலை-2026	19-07-2026	01-04-2026 to 31-05-2026	05-06-2026
அக்டோபர்-2026	18-10-2026	01-07-2026 to 31-08-2026	05-09-2026

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பங்கள் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (https://shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

★ **D.D.** *மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.*

our web portal @ **https://shabari.in**

पढ़ो मन भरके

शबरी
शिक्षा समाचार

वर्ष 27, अंक 11 मूल्य ₹ 3/- नवम्बर - 2025

प्रधान संपादक

एम. वेंकटेश्वरन

संयुक्त संपादक

आर. जयकरन

सहायक संपादक

आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय

Shabari Siksha Samachar

R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक

Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES

Whatsapp : 9443165414

Office Phone : 9842765414

Office Phone : 9443365414

VANI VIKAS NUMBER

0427-4265414

0427-4552100

Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

अनमोल वचन

प्यार की महानता

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर का कहना है – मधुर शब्दों से बात करनेवाली प्रेमिका के मोती जैसे दाँतों के बीच में से आनेवाली थूक दूध और शहद के मिश्रण जैसे बहुत ही मधुरपूर्ण है ।

मेरी पत्नी और मेरे बीच का प्यार भरा रिश्ता जान और तन के रिश्ते के बराबर है । एक के बिना दूसरा रह नहीं सकता ।

ओ मेरी आँख की पुतली तुम वहाँ से निकल जाओ । मैं अपनी प्रेमिका को आँखों में बसानेवाला हूँ ।

मेरी पत्नी से मिलन सुख का अनुभव करता हूँ वह मेरी जान के लिए शरीर बन जाती है । जब वह मुझसे दूर जाती है तब ऐसा लगता है कि तन से जान निकल रही है ।

बहुत ही चमकनेवाली रोशनी से भरी आँखेंवाली मेरी पत्नी की याद मैं नहीं करता । मैं उसे कभी भूल नहीं सकता तो याद कैसे कर सकता हूँ ?

मेरे पति मेरी आँखों से कभी दूर नहीं जाते । अगर मैं आँख झपक लूँ तो भी वे कभी बुरा नहीं मानते । उनका प्यार बहुत नरम है ।

मेरे पति मेरी आँखों में बसते है । इसलिए मैं कभी काजल नहीं अपनाती । मेरे प्यार को कभी दुख नहीं पहुँचाती ।

मेरे पति मेरे छाती में बसते हैं । मैं कभी गरम चीजें नहीं खाती । उससे उनको दुख पहुँचाना नहीं चाहती ।

मेरे पति मेरी आँखों में बसते हैं । इसलिए मैं कभी पलकों को नहीं झपकती । इसे जानेबिना लोग उन्हें प्यारहीन कहते हैं ।

मेरे पति मेरे दिल में सदा बसे रहते हैं । इसे जाने बिना लोग उन्हें प्यारहीन कहते हैं ।

✍ संपादक की कलम से ...

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

बदलते परिवेश के साथ बदलना मानव का स्वभाव बन चुका है । आदिकाल के मानव को अब हम कल्पना भी कर नहीं सकते । सिर्फ कपड़ों में ही नहीं बल्कि विचारों में, भावों में, आचार, व्यवहार, खाना, पीना सब कुछ में आज मानव बदल गया है । कुछ प्रकृति के कारण हुआ है तो बहुत कुछ आधुनिक साधनों के कारण भी जरूर बदला है ।

मानव अपने विचार, आचार आदि के साथ संस्कृति पर भी बदलाव ला चुका है । जहाँ तक मानव के मूल स्वभाव और जानी-मानी संस्कृति में बदलाव नहीं होता तब तक यह बदलाव स्वीकार्य ही रहेगा ।

आजकल के चलित भाष के कारण दूरी बहुत दूर जा चुकी है । माता-पिता से दूर रहनेवाले बच्चे चाहे कितने भी किलोमीटर दूर पर हो हर रोज मोबाइल फोन के कारण वीडियो कॉल के जरिए अपने माता-पिता को देख सकते हैं । प्रेमी और प्रेमिका के लिए तो यही दुनिया बन चुका है ।

छोटे से बड़े संदेश भेजने के साथ चलचित्र तक भेजना और पाने की सुविधा आज मानव पा चुका है । आज की इस सुविधा के कारण भारत में बैठा एक चतुर व्यापारी दुनिया के हर कोने में अपना व्यापार कर सकता है । व्हाट्स अप इसका प्रमुख कारण बन चुका है ।

आज भारत के तमिलनाडु में से एक ऐसा ऐप बन चुका है जिसका नाम है अरट्टै । यह एक भारतीय ऐप है जिसके जरिए हम उन्हीं सुविधाओं को बड़े आराम से पा सकते हैं । भारत के अपने ऐप का प्रयोग करके हमें उन्हें प्रोत्साहन प्रदान करने के साथ इसके उपयोग को बढ़ाना चाहिए । उससे हमारे देश के नौजवानों को नव उत्पत्ति और नव विकास प्रदान करने का मौका मिलेगा और देश उन्नति की ओर बढ़ेगा ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!

क्यों नहीं ?

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

समय का कोई अता पता नहीं था । मुझे तो समय की बिलकुल चिंता नहीं थी क्योंकि ऐसा कोई काम नहीं था जो सिर पर चढ़कर मुझे सतावे । कोई और नहीं थे जो मुझे समय का याद दिलाकर घर जाने को कहे । रात का लगभग 8:30 बज चुका होगा उस पार्क में मेरे अलावा एक दो व्यक्ति ही थे । वे भी मेरे पास नहीं बहुत दूर पर बैठे बात कर रहे थे ।

शाम को 4:00 से यहाँ लोगों की भीड़ लग जाती थी और कुछ लोग टहलते तो कुछ लोग कहीं बैठकर अपनी मन की बात सबसे व्यक्त करते थे । आजकल के शहरों में ऐसे बहुत कम पार्क मिलते हैं जहाँ लोगों को चलने फिरने या फिर कुछ देर बैठकर बात करने का मौका मिलता है । यही हमें कुछ पेड़ों को एक साथ देखने का मौका भी मिलता है । आज के शहरों में बड़े-बड़े रंग बिरंगे मकान बन चुके हैं जहाँ पेड़ पौधों का स्थान कहीं-कहीं बिलकुल ना हो चुका है । कहीं-कही कोई तालाब बच जाता है तब भी उसके चारों ओर सड़कें बनाकर लोगों को टहलने और बैठने का स्थान दिया जाता है ।

सेवानिवृत होने के बाद जब मुझे कुछ खास काम नहीं रहा तब से मैं इस पार्क में आया करता हूँ । कभी-कभी किसी को हंसते-हंसते बात करते हुए देखता हूँ । कभी-कभी कुछ उदास चेहरे दिख जाते हैं जो रोना चाहते हैं लेकिन रो नहीं पाते हैं ।

यहाँ तो कुछ लोग खूब खाने से मोटा होकर अपनी चर्बी कम करने के लिए टहलने आते हैं । कुछ लोग अपने पेट पालने के लिए हाथ फैलाने के लिए भी आते हैं । आजकल तो बहुत ऐसी जोड़ी यहाँ मिल जाती है जो प्यार के नाम पर कामवासना की पूर्ति के लिए पेड़ों के नीचे या पौधों के पीछे छुप जाते हैं ।

मैं कुछ अपने बारे में सोचने लगा । एक जमाना था जब मुझे भी कामवासना सताती थी । मैं भी उन कार्यकलापों में लग रहा जिसमें तब अनंत

सुख का अनुभव होता था। आज तो उन सब चीजों में मेरा मन नहीं लगता। यह जिंदगी मुझे कब तक इस दुनिया में रहने को मजबूत करेगी मुझे पता नहीं। मेरा अंत एक दिन जरूर होगा लेकिन मुझे अभी तो मालूम नहीं है कि यह कब होगा ? दिन में समय काटना बहुत ही मुश्किल लगता है। हाँ पत्नी साथ देती है वह तो दूसरी बात है लेकिन फिर भी पूरा दिन काटना कभी कभी मुश्किल लगने लगता है। दिन में सो जाता हूँ तो रात को नींद नहीं आती है। रात को नींद नहीं आती है तो दिन की शुरुआत ही नहीं होता है।

भगवान की कृपा से सब कुछ अच्छा रहा। माता-पिता बहुत अच्छे थे। बड़ी सरकारी पदवी भी मिली। पुत्र पुत्र भले ही पास नहीं हो फिर भी बहुत अच्छी तरह अपना जीवन बिता रहे हैं। लेकिन सेवानिवृत होने के बाद मेरी जिंदगी मुझे बहुत बड़ा बोझ हो चुकी है। मैं अभी समय काटनेवाला बन चुका हूँ। चिंता की कोई बात नहीं है लेकिन चिंता से दूर रहने का भी माहौल जिंदगी में नहीं है।

मैं तो अपने बारे में सोच रहा था। विचार तरंगे विराम के बिना चल ही रही थी। तभी एक भिखारी, भिखारी नहीं भूख मिटाने के लिए हाथ फैलानेवाला कह सकता हूँ आया। मेरे सामनेवाले चबूतरे पर लेट गया कम से कम 1 मिनट हुआ होगा उसके खर्राटे की आवाज मुझ तक पहुँच रही थी। पहुँच क्या मुझे वहाँ से भगा रही थी। मैं वहाँ से उठ गया और आगे बढ़ने लगा। दूर से गाना बज रही थी... जिसके पास सब कुछ है बहुत ही तड़पता है, जिसके पास कुछ भी नहीं वह आराम की नींद सोता है।

मेरा मन बदल गया। आज से मैं खूब सोऊँगा। दिन में किसी ना किसी जगह किसी की मदद जरूर करूँगा। हर रोज शाम को अपनी पत्नी सहित मंदिर जाऊँगा। जिंदगी जीने का है। अंत तक उसका मजा जरूर लेना है। सोचते सोचते घर तक पहुँच गया जहाँ मेरी जिंदगी यानि मेरी पत्नी मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। कल से मेरी जिंदगी और चमकेगी। अंतिम साँस तक अब मैं अपनी जिंदगी को पूरी तरह जिऊँगा। सालों बाद मैं अपने पत्नी को गले लगाया। वह शर्मिंदा होकर सिकुड़ रही थी। जिंदगी अब जरूर मधुरतम ठहरेगी।

संस्कार : भारतीय सभ्यता की आत्मा

– डॉ. योगिता जोशी,
जयपुर, राजस्थान

भारत केवल एक देश नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन है। इसकी पहचान मंदिरों, पर्वों या परंपराओं से ही नहीं, बल्कि उन संस्कारों से है, जो पीढ़ियों से हमारे व्यवहार, आचरण और विचारों में प्रवाहित हैं। वास्तव में संस्कार ही भारतीय सभ्यता की आत्मा है, जो मनुष्य को भीतर से प्रकाशमान और समाज को सद्भाव से परिपूर्ण बनाते हैं। संस्कार ही किसी मनुष्य की पहचान है।

'संस्कार' का अर्थ है – किसी वस्तु या व्यक्ति को परिष्कृत, पवित्र और योग्य बनाना।

ये हमारे जीवन के वे गुण हैं जो हमें सत्य, करुणा, सेवा, संयम और सहिष्णुता की दिशा में प्रेरित करते हैं।

संस्कार व्यक्ति के आचरण में झलकते हैं – वह कैसे बोलता है, दूसरों से कैसा व्यवहार करता है और समाज में क्या योगदान देता है। अच्छे संस्कार अच्छे मनुष्य और अच्छे समाज का निर्माण करते हैं।

संस्कारों से ही व्यक्ति अपने भीतर की नकारात्मकता को त्यागकर श्रेष्ठता की ओर बढ़ता है। यही प्रक्रिया उसे 'मानव' से 'महान' बनाती है।

भारतीय संस्कृति की नींव ही संस्कारों पर टिकी है।

हमारे शास्त्रों में जीवन के प्रत्येक पड़ाव के लिए सोलह संस्कार बताए गए हैं – जैसे नामकरण, उपनयन, विवाह आदि।

इनका उद्देश्य व्यक्ति के भीतर अनुशासन, कर्तव्य और आत्मसंयम की भावना जगाना है।

हमारे पर्व–त्योहार भी संस्कारों के माध्यम हैं – दीपावली में प्रकाश का, होली में बुराई पर अच्छाई का, रक्षाबंधन में प्रेम और सुरक्षा का संदेश मिलता है।

यह सब केवल परंपरा नहीं, बल्कि मूल्य–संस्कारों की अभिव्यक्ति है ।

संस्कारों की शुरुआत परिवार से होती है ।

माता–पिता, दादा–दादी, गुरु – ये सब संस्कारदाता हैं ।

माँ के स्नेह से करुणा का, पिता के अनुशासन से जिम्मेदारी का, और बड़ों के आशीर्वाद से विनम्रता का संस्कार जन्म लेता है ।

संस्कार वही बीज हैं, जो बाल्यावस्था में बोए जाएँ तो जीवनभर फलते हैं ।

आज तकनीक ने जीवन को आधुनिक तो बना दिया है, पर भावनाएँ कहीं पीछे छूट गई हैं ।

भौतिक प्रगति के साथ नैतिक पतन भी बढ़ा है ।

संस्कारों की कमी से समाज में असहिष्णुता, स्वार्थ और हिंसा पनप रही है ।

ऐसे समय में सबसे बड़ी आवश्यकता है कि हम शिक्षा के साथ संस्कार शिक्षा को भी समान महत्व दें ।

संस्कारवान नागरिक ही सच्चे अर्थों में विकसित राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं ।

संस्कार भारतीय जीवन का प्राण है । व्यक्तित्व का आधार है । यह आत्मा का श्रृंगार है । ये केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि भविष्य का मार्ग हैं । जब तक हमारे भीतर करुणा, सत्य, और सेवा का भाव जीवित रहेगा, तब तक भारतीय सभ्यता अमर रहेगी । भारतीय सभ्यता ही नहीं, विश्व की हर सभ्यता का आधार संस्कार ही है बशर्ते लोग इसे समझें ।

संस्कार हमें यह सिखाते हैं कि महानता बाहरी उपलब्धियों में नहीं, भीतर की विनम्रता, मर्यादा और मानवीयता में है ।

इसलिए कहा गया है – ‘‘संस्कार ही संस्कृति की आत्मा हैं, और संस्कृति ही भारत की पहचान ।’’ यह भी कहा गया है बिन संस्कार नहीं उद्धार । एक व्यक्ति घर को तो संस्कारित करता ही है उसके कारण एक समाज और एक राष्ट्र भी संस्कारित होता है ।

उपरोक्त लेख मौलिक एवं अप्रकाशित है ।

ग्राम्य संस्कृति का जीवंत उत्सव श्यामकार्तिक महोत्सव

कार्तिक पूर्णिमा का पावन पर्व

– श्री. त्रिभुवन लाल साहू,
जाँजगीर, छत्तीसगढ़

जाँजगीर जिला मुख्यालय से दक्षिण दिशा में लगभग आठ किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक शांत हरित ग्राम बोड़सरा, जहाँ देखने को भले कोई भव्य ऐतिहासिक धरोहर न हो, परंतु यहाँ की मिट्टी में रची बसी गौरवशाली परंपरा एक अद्वितीय आकर्षण समेटे हुए हैं । इस गाँव का श्यामकार्तिक महोत्सव एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि लोकसंस्कृति, आस्था और सामाजिक समरसता का सजीव संगम है श्यामकार्तिक महोत्सव उस आयोजन का नाम है, जो पीढ़ियों को अपनी जड़ों से जोड़ता चला आ रहा है ।

पिछले चार दशक से ज्यादा समय से निरंतर आयोजित हो रहा यह महोत्सव, एक वर्ष के अंतराल में कार्तिक पूर्णिमा के पावन अवसर पर अपने शिखर पर पहुँचता है । मूर्ति स्थापना से प्रारंभ होकर कार्तिक पूर्णिमा तक चलनेवाला यह आयोजन पूरे क्षेत्र को एक नए उल्लास, उमंग और आध्यात्मिक ऊर्जा से सरोबार कर देता है । महोत्सव के आरंभ होते ही मानो समूचा बोड़सरा गाँव जीवंत हो उठता है । गलियों में रौनक, घरों में मेहमानों का स्वागत और कुमार कार्तिकेय की भक्ति और पावन ध्वनि से हर ओर सब में युवा हो या वृद्ध, महिला हो या पुरुष, उत्सव की लहर दौड़ जाती है । जो इसे महापर्व बना देता हैं । इस महोत्सव के दौरान गाँव के घर आँगन अतिथियों से भर जाते हैं । दूर-दराज के सगे-संबंधी और मित्र इस पावन अवसर पर आते हैं, जो इस उत्सव को और भव्य बना देता है । महोत्सव का हर दृश्य स्मृतियों में कैद हो जाता है जो वर्ष भर की थकान मिटाकर हृदय को नई ऊर्जा से स्पंदित कर देता है और जब भी मेले व महोत्सव का नाम जेहन में आता है तो यह दृश्य फिर औचक आँखों के समक्ष दृश्यमान हो जाता हैं ।

तलवा, नवा और बमरी तालाब के पार में मेला का शानदार नजारा होता

है । दुकानों की पंक्तियाँ, झूले की गूंज, पारम्परिक चना चरपटी का स्वाद बच्चों की खिलखिलाहट सब मिलकर एक जीवंत सांस्कृतिक छवि गढ़ते हैं । आयोजन की शुरुआत भगवान कार्तिकेय की मूर्ति स्थापना से होती है और इसके पश्चात नौ दिनों तक विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला गाँव के वातावरण को उल्लासमय बनाए रखती है । प्रदेश के ख्यातिलब्ध कवि, गायक, नाचा दल और कलाकार अपनी कला से इस उत्सव में नई ऊँचाई जोड़ते हैं । कीर्तन, जागरण, आर्केस्ट्रा नाइट और लोकनृत्य 'नाचा' का रंगारंग प्रदर्शन कार्यक्रम का रोमांच बनाये रखता है । अंतिम दिन छत्तीसगढ़िया टच मांदर की थाप में लोक-संगीत के माध्यम से अब कर्मा नृत्य के जुड़ाव के बीच भगवान श्यामकार्तिक की प्रतिमा का विसर्जन होता है । इस दौरान जनसैलाब उमड़ना इस महोत्सव की महिमा को चरोमत्कर्ष में पहुँचा देता है । जो हर हृदय में अपार श्रद्धा आनंद व ऊर्जा भर देता है ।

आयोजन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ के लोग, जो वर्षभर रोज़मर्रा की व्यस्तता में गाँव से दूर रहते हैं, वे इस अवसर पर लौटकर अपने मिट्टी से, अपने लोगों से, अपनी पहचान से फिर जुड़ जाते हैं । अतिथि देवो भव की भावना से ओतप्रोत ग्रामीण, आनेवाले हर अतिथि का आत्मीय सत्कार करते हैं । यह महोत्सव जाँजगीर तक सीमित न रहकर पूरे क्षेत्र में पहचान और प्रभाव बना चुका है । एक ऐसा मंच है जहाँ सांस्कृतिक, साहित्यिक और कलात्मक प्रतिभाएँ निखरती हैं, नई पीढ़ी अपने लोक और परंपरा अपने विरासत से परिचित होती है । यह महोत्सव हमारी विरासत से मिली वह परंपरा है जो हमारे ग्राम्य जीवन की विशिष्ट पहचान है । जब तक हमारी संस्कृति और परंपरा जीवित है, तब तक हमारी पहचान जीवित है ।

साहित्यकारों से निवेदन है कि वे स्वरचित, अप्रकाशित रचनाएँ मात्र भेजें । अन्य पत्रिकाओं व सोशियल मीडिया या अन्य जगहों पर प्रकाशित रचनाएँ कभी नहीं भेजें ।

हिन्दी

– श्री. विजय मोहन सिंह,
चेन्नै, तमिलनाडु

मनुष्य संसार की कोई भी भाषा सीख सकता है लेकिन उस भाषा में कविता करने में सक्षम लाखों में कोई एक होता है... इस दृष्टिकोण से अगर हम देखें तो पाएँगे कि तमिलनाडु में हिन्दी के प्रति कितना समर्पण और प्रेम है...

तमिलनाडु में होनेवाली ये 'वरिष्ठ नागरिक काव्य मंच' की काव्य गोष्ठियाँ इस बात का ज्वलंत प्रमाण हैं कि अहिन्दी भाषी दक्षिण क्षेत्र में हिन्दी भाषा का अंतर प्रवाह कितना तीव्र है । निश्चय ही इसका श्रेय 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचारिणी सभा' को जाता है...

उत्तर भारत में, विशेषतः हिन्दी भाषी लोगों के बीच में यह गलतफहमी है कि दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रति विद्वेष है... इसका मूल कारण है दक्षिण की भाषाओं की द्रविड़ पद्धति और उत्तर की भाषाओं का संस्कृत उद्‌गम और मध्य-पूर्व की भाषाओं का प्रभाव... इन भाषाओं में बोलचाल और लिपि दोनों में ही जमीन आसमान का अंतर है...

हिन्दी भाषी क्षेत्र से जब कोई दक्षिण भारत में आता है तो उसे यहाँ की भाषा बहुत दूरुह लगती हैं... लेकिन जल्दी ही वह बोलचाल की भाषा सीख लेता है... इसी प्रकार जब कोई दक्षिण का व्यक्ति हिन्दी प्रदेश में जाता है तो उसे भी वहाँ की भाषायें अति कटु एवं अभेद्य लगती हैं... लेकिन शीघ्र वह भी इन भाषाओं में पारंगत हो जाता है...

मैं जब 1983 में चेन्नई आया था तो मुझे लगता था कि तमिल भाषा सीखने के लिए मुझे एक जन्म और लेना पड़ेगा, और वह भी तमिलनाडु में... लेकिन 'मरता क्या ना करता' जल्दी ही काम चलाऊ भाषा सीख गया...

मैं कोई भाषाविद् नहीं हूँ... ये बस मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि जब-जब

कोई हिन्दी भाषी क्षेत्र में ताल ठोंकता है कि हम हिन्दी को 'उस स्तर' तक ले जायेंगे... तब-तब राजनीतिक दलों को भाषाई अस्मिता और संस्कृति का हवाला देकर अपने लोगों को एक परचम तले लाने का सुअवसर मिल जाता है...

सच पूछिए तो हिन्दी को किसी शासकीय या राजनीतिक बैसाखी की जरूरत कतई नहीं है... यह एक संपर्क भाषा है और इंसान की जरूरत के हिसाब से अपनी उपयोगिता सिद्ध करती जा रही है...

जरूरत है इसे 'प्यार की भाषा' बनाने की... व्यवहार में यह स्वयं आ जाएगी...

यहाँ एक बात और कहना चाहूँगा कि उत्तर भारतीय प्रदेशों में हर दो जिलों के बाद वहाँ की मातृभाषा बदल जाती है... बोलने का अंदाज बदल जाता है... लेकिन हिन्दी सीखने के बाद भी वह अपनी मातृभाषा नहीं भूलते हैं... अपने लोगों के बीच में तो वह अपनी ही भाषा बोलते हैं... हाँ जो लोग अँग्रेजी बोलना सीख जाते हैं वह जरूर अपनी मातृभाषा को भूल जाते हैं...

'अपनी मातृभाषा हर किसी को प्यारी होती है'

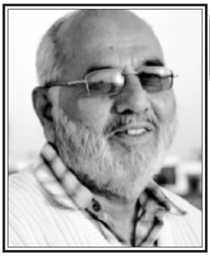

शरद पूर्णिमा

– श्री. मईनुदीन कोहरी 'नाचीज़ बीकानेरी',
बीकानेर, राजस्थान

तुम भी आओ, मैं भी आऊँ
चलो आज चंदा को निहारें
शीतल-शीतल चाँदनी में
हम मिल कर खूब नहाएँ ।

धीमे धीमे चंदा नील गगन में
अमृत बन धरती पर बरसाए
तुम भी कुछ गाओ, मैं भी गाऊँ
अमृत-सी चाँदनी में मन बहलाएँ ।

शरद पूर्णिमा की मधुर बेला में
संगीत के संग सुर में सुर मिलाएँ
कुदरत ने हमें ये उपहार नवाजा
भूली बिसरी यादों के संग नहाएँ ।

बादलों की ओट में लुक छिप कर
जग में चंदा अमृत-सा रस बरसाए
चंदा की चाँदनी से नयनों को धोएँ
आज खुल कर भूले बिसरे गीत गाएँ ।

घूँघट

– श्री. शुभम पांडेय ‘गगन’,
अयोध्या, उ.प्र.

समाज की कुछ प्रथाएँ है जो शायद अच्छी से ज्यादा लोगों को दबा के रखनेवाली है । ऐसे परम्परा जो जिसका परिणाम अच्छा के साथ बुरा भी है ।

अभी मुश्किल में 10 दिन भी नहीं हुए विजय की शादी को जिसकी पत्नी डॉक्टर है एक नजदीक के अस्पताल में । वह पढ़ी लिखी नई ज़माने की स्वछंद विचारों की लड़की है । सारा परिवार उस से खुश है । बहू बड़ी अच्छी है जो नौकरी भी करती है और समय निकाल कर घर के कामों में भी हाथ बंटा लेती है ।

आज मोहल्ले के शर्मा जी की पत्नी घर पे आयी तो बहू ने चाय दिया और प्रणाम किया । उसके बाद वह अपनी सासू माँ से बोली, माँ जी ! मुझे कुछ फ़ाइल पढनी है मरीज़ की मैं अपने कमरे में जाऊँ । उसकी सासू माँ ने भी आज्ञा दे दी ।

शर्मा जी की पत्नी ने कहा कि तुम्हारी बहु की आदतें तो बाकी सब ठीक और पढ़ी लिखी भी है बस घूँघट नहीं रखती । दिन भर तो वैसे अपनी डॉक्टर पोशाक में रहती लेकिन पर्दा उसमें नहीं है ।

विजय की माँ ने मुस्कुराते हुए कहा कि वह नए जमाने की पढ़ी-लिखी और अपने पैर पर खड़ी लडक़ी है । वह कहाँ इन पर्दे और घर में दबा के रखी जानेवाली बहुओं जैसी हैं जैसे हम लोग थे और ऐसे होना भी नहीं चाहिए । घूँघट से ज्यादा जरूरी सम्मान देना है ।

इस घटना को घटे काफी समय बीत चुके हैं । आज शर्मा जी के यहाँ पुलिस आयी थी सुना है उनकी बहू ने अपनी सास और पति पर दहेज का आरोप लगाया है । सुनने में आ रहा कि यह बात भी गलत है क्योंकि शर्मा जी का परिवार ऐसे नहीं । उन्होंने अपने बेटे की शादी गरीब घर की लड़की से इसलिए किया जिससे वह आये और सब सम्भाल ले क्योंकि उन्हें

कामकाजी घरेलू बहु चाहिए न कि बाहर कमानेवाली ।

पुलिस के आने के बाद शर्मा जी की बहू घूँघट में लड़ते हुए बाहर निकली और सड़क पर न जाने क्या क्या बोलने लगी अपने सास और ससुर को । चलो किसी तरह मामला शान्त हुआ और कुछ दिन बाद पता चला कि शर्मा जी की बहू ने अपनी सास से अलग रहने के लिए ये सब नाटक किया था । ये सब जानकर मोहल्लेवाले कहने लगे बहु अगर घूँघट में हो तो जरूरी नहीं वह सम्मान देगी और बिना घूँघट वाली नहीं । कभी कभी बिना घूँघट वाली बहु पर्दे वाली से ज्यादा अच्छी और सम्मान देनेवाली होती है ।

समाज की व्याप्त ये विचार की बहू का मतलब घूँघट में दबी स्त्री नहीं बल्कि घर से निकलकर अपने सास-ससुर, माता-पिता और पति का सम्मान बढ़ाना भी है ।

यह भी प्रदूषण ही है

- डॉ. अलका अग्रवाल,
जयपुर, राजस्थान

शर्मा जी पर्यावरण प्रदूषण के प्रति बहुत सजग है और पौधारोपण भी करते हैं । अच्छे वक्ता होने के कारण उन्हें पर्यावरण संरक्षण विषय पर भाषण के लिए भी बुलाया जाता है । एक दिन ऐसे ही किसी कार्यक्रम से वे लौट रहे थे । उनकी कार सड़क पर दौड़ रही थी कि गलत तरफ से ओवरटेक करती हुई मोटर साइकिल ने उनकी कार को टक्कर मार दी और तीर की गति से आगे चली गई । कार साइड में करके, शर्मा जी ने मोटर साइकिलवाले को धारा प्रवाह गालियाँ देनी शुरू कर दीं । हालांकि मोटर साइकिलवाला तो कब का उड़न छू हो चुका था ।

तभी उनके ऑफिस में ही काम करनेवाले गुप्ता जी भी उधर से निकले, उनके मुख से अपशब्दों की बौछार देखकर सोचने लगे कि कैसे पर्यावरण संरक्षक हैं शर्माजी ? सड़क के माहौल को गालियों से प्रदूषित करने में, इन्हें जरा भी संकोच नहीं हो रहा है । आखिर यह भी तो पर्यावरण प्रदूषण ही है !

सौगंध तुम्हे श्रीराम की...

(रावण मंदोदरी संवाद)

– श्री. मदन सुमित्रा सिंघल,
शिलचर, असम

भारतीय जीवन मे रामायण की अहंम भूमिका रही है चाहे सामाजिक धार्मिक सहित राजनीति मे सपष्ट रुप से धार्मिक ग्रन्थों का असर देखा जाता है लेकिन दृष्टिकोण अपना–अपना होता है ।

जब श्री राम–लक्ष्मण नल नील के द्वारा निर्मित रामसेतू बनाकर लंका के पास आ गए तो मंदोदरी बहुत चिंतित हुई । अपने पति रावण को गुहार लगाई कि अब देर नहीं अब खैर नहीं, रावण अट्टहास करते हुए कहा कि इस वानर–भालू की सेना से डर गयी । तो मंदोदरी ने कहा महाराज इस लंका के अभेद्य दुर्ग को दो वानर नल नील पत्थरों से सेतु बनाकर लंका पर चढाई करदी । इस विशाल संमुद्र में जिस राम के नाम के पत्थर तैर गए क्या उस राम से आप प्रत्यक्ष युद्ध कर सकेंगे ।

रावण ने कहा कि यह कोई सैन्य बल नहीं ना ही राम नाम का चमत्कार ऐसे तो रावण के नाम से भी पत्थर तैराये जा सकते हैं । मंदोदरी बोली, ‘‘यदि ऐसा संभव है तो महाराज आप शंका समाधान करें । रावण सहर्ष तैयार हो गया ।

निर्धारित समय पर समंदर के किनारे गए तो एक भारी पत्थर रावण ने मंत्रोच्चारण के बाद छोड़ा वो तैर गया । सब जगह जय लंकेश का जयघोष होने लगा लेकिन मंदोदरी आँखों से देखने के बावजूद असंतोष में विचलित हो गई ।

मंदोदरी ने हाथ जोड़कर कर रावण से पूछा कि महाराज कृपया सत्य बताइये कि इसका राज़ क्या है ?

रावण ने कहा कि मैंने पत्थर फेंकने से पहले पत्थर को कहा था कि तुझे, सौगंध है श्रीराम की, इसलिए पत्थर तैर गया । मंदोदरी ने फिर रावण को समझाया कि आप अभी भी सीता को सौंप कर राम से क्षमादान मांग कर लंका को बचा सकते हैं लेकिन रावण समूल नष्ट हो गया लेकिन जायज सलाह ठकुराता गया ।

लघु-आलेख

– श्री. वल्लभ यमुनेश्वरी,
नैनपुर, म.प्र.

''जागतिक कल्याण एवं समन्वयी भावना के प्रसार की आवश्यकता !''

मुझे तेलुगु कवि श्री टी. विनय बाबु की ये पंक्तियाँ अकस्मात स्मरण आ रही हैं –

''ना देशं, भारत देशं !
संस्कृति निलयं, भारत देशं !
सम्पदा निलयं, भारत देशं !
अनेकभाषाला प्रतिरूपं, भारत देशं !''

कहने का तात्पर्य यह है कि हमारा भारत देश सांस्कृतिक वैविध्य से समृद्ध है ! अनेक प्रकार की सम्पदाओं का आगार है ! हमारे देश के नैसर्गिक एवं मानवीय संसाधन उत्कृष्ट हैं ! हमारा देश अनेक भाषाओं, विभाषाओं और बोलियों का प्रतिरूप है ! पर विडंबना यह है कि आज देश संकुचित दुराग्रहों का सामना कर रहा है ! आज भाषावाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद और साम्प्रदायिकता बढ़ती जा रही है ! रियासती स्वार्थलिप्सा, संकुचित विचारों को बढ़ाती है ! फिर भी ऐसे व्यक्ति भी विद्यमान हैं जो सांस्कृतिक समन्वय एवं राष्ट्रीय एकता के प्रति समर्पित हैं !

एक तेलुगु कहावत है – मनसु उंटे मार्गं ! अर्थात् दृढ़ इच्छा शक्ति अपना मार्ग स्वयं खोज लेती है ! यदि सभी में राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना हो तो हम सांस्कृतिक समन्वय की सुरभि से आनंदित हो जाएँगे ! अन्तरजातीय, अन्तरधार्मिक, अन्तरप्रान्तीय एवं अन्तरभाषायी विवाहों को प्रोत्साहन राष्ट्रीय एकता के मार्ग में सार्थक पहल होगी ! विविध भाषाओं के साहित्य का आपस में अनुवाद एवं रूपान्तर साहित्यिक समन्वय की दिशा में श्रेष्ठ कदम होगा ! मैं यही आशा करता हूँ कि हम सभी देशवासियों में भारतीयता की भावना का शाश्वत संचार होता रहेगा ! हम जागतिक कल्याण की भावना को संबल प्रदान करते रहेंगे !

किलकारी

– डॉ. शिखा अग्रवाल,
सीकर, राजस्थान

''अरे देखो, चिड़िया के घोंसले में अंडों से बच्चे निकल आए'' चारों बच्चों को चोंच ऊपर किए चीं चीं की आवाज़ करते देख कर माधुरी ने खुशी से सुबोध को पुकारा । लॉन में लगे पेड़ पर काफी दिनों से चिड़िया तिनका-तिनका ला कर घोंसला बना कर अंडे पर बैठी रहती थी । 'इंसान ही नहीं पक्षी भी अपने बच्चों के लिए कितनी मेहनत करते हैं और बच्चे बड़े होते ही मोह छोड़ फुर्र हो जाते हैं' माधुरी के बच्चे भी तो योग्य बनते ही विदेश जा कर बस गए थे ।

माधुरी और सुबोध को भी अपना घर काटने को दौड़ने लगा था । कुछ दिन तो फोन पर बात होती रही फिर बच्चों की व्यस्तता बढ़ने के साथ फोन आने भी कम हो गए । कुछ दिन उदास और मायूस रहने के बाद उन दोनों ने घर में बच्चों के लिए पालनागृह खोल लिया । काम में मदद के लिए उन्होंने एक सहायिका भी रख ली । अब दिनभर माधुरी उन छोटे बच्चों की देखभाल करने और उन्हें स्वादिष्ट पौष्टिक खाना बना कर खिलाने में व्यस्त रहने लगीं । उन बच्चों की देखभाल में उन्हें अपने बच्चों जैसा सुख मिलता था । तभी दरवाजे की घंटी बजी । एक नन्हा बच्चा पालनागृह में आया था । नए मेहमान की किलकारी से उनका घर भी चिड़िया के घोंसले की तरह चहक उठा ।

अरे खिल खिलाकर हंसनेवाले सुन लो कान खोलकर
दूसरों पर हंसना सीखोगे तो कभी सुखी ना रहोगे
उचित बात पर हास्य के बल पर हंसोगे तो जिओगे
हंसी तभी हंसी ठहरती है जब वह सामनेवालों में भी बसती है ।

लघुकथा

छद्म

– श्री. विजय शंकर विकुज,
आसनसोल, प.बं.

अस्पताल में शंकर के कई रिश्तेदार और मित्र पहुँच गये थे। सभी उसे बधाई दे रहे थे। उसकी पत्नी को बेटा हुआ था। बाहर शंकर सभी से घिरा हुआ बहुत खुश नजर आ रहा था। एक महिला रिश्तेदार ने हँसकर कहा, ''मैंने देखा है। बच्चा बहुत सुंदर है। देखने में कृष्ण–कन्हैया की तरह लगता है।''

एक मित्र ने हँसते हुए कहा, ''बाप सुंदर है तो बेटा भी सुंदर ही होगा। वैसे शंकर किसी तरह के अंधविश्वास को नहीं मानता है। बोलिये न कि इसका बेटा देखने में किसी राजकुमार की तरह लगता है।''

वहीं एक दूसरे मित्र ने तपाक से कहा, ''जो भी हो, कामरेड शंकर को हम सभी की तरफ से बधाई। उनके घर नया कामरेड आया है।''

आसपास खड़े और कई लोग उसे बधाई देने लगे।

एक दूसरी महिला रिश्तेदार ने पूछ लिया, ''बच्चे का नाम क्या रखने का सोच रहे हो शंकर भैया ?''

शंकर के मुँह से अनायास निकल पड़ा, ''गणेश, मेरा नाम शंकर है तो उसका नाम गणेश होगा।''

दुनिया से बचकर रहो दुनियादारी सीखी नहीं जाती
नाटक जो रच सकता है वही बचता है
न्यायी यहाँ पर हर कोने में मार खाता है
खुद के लिए जब कुछ कर नहीं पाओगे
जिंदगी को विजई तुम कैसे पाओगे
मुखौटे पहन कर घूमते रहते हैं लोग यहाँ वहाँ
पता नहीं चलेगा तुझे नेक नियमी कौन है यहाँ
न्याय धर्म के मार्ग पर चलते रहो दुखना होगा
कार्य अपने करने से मत डरो सहने से तुम चमकोगे
जैसी करनी वैसी भरनी आज भी सच है तुम आगे बढ़ो।

बेटियों से मत छीनो

–श्री. मोनिका डागा 'आनंद',
चेन्नै, तमिलनाडु

बेटियों से मत छीनो तुम उनका स्वतंत्र अधिकार,
बहने दो उनमें भी निर्बाध अमृत ''आनंद'' रसधार ।

बिटिया संस्कारों को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढाती,
तुम्हारे आँगन को अपनी चहल-पहल से सजाती,
तुम्हारे मौन भावों को वो बिना कहे समझ जाती,
समय से पहले ही जिम्मेदारियों में रच बस जाती,
निभाती है वो कई रूपों में बख़ूबी अपना किरदार,
बहने दो उनमें भी निर्बाध अमृत ''आनंद'' रसधार ।

आज तुम्हारे आँगन में एक नन्ही कली है मुस्कराई,
कल समाजिक रीति-रिवाजों में बँध करोगे विदाई,
क्यों तुमने छिना हक उनका हिस्से में दी रूसवाई,
क्या जानते हो सीने में अनकही इच्छाएँ उसने छुपाई,
मत बनाओ उनको खोखली रूढ़िवादिता का शिकार,
बहने दो उनमें भी निर्बाध अमृत ''आनंद'' रसधार ।

पुरानी कुरीतियों, प्रथाओं का बोझ उन पर हो डालते,
क्यों उनकी प्रतिभा को दूसरों से सदा कम हो आंकते,
बिटिया को भी दो पंख तुम फलक में उड़ने के वास्ते,
अपनी सशक्त पहचान बनाने के लिए खोल दो रास्ते,
बेटे हैं कलेजा तो बिटिया को भी करो तुम स्वीकार,
बहने दो उनमें भी निर्बाध अमृत ''आनंद'' रसधार ।

बेटियों से मत छीनो तुम उनका स्वतंत्र अधिकार,
बहने दो उनमें भी निर्बाध अमृत ''आनंद'' रसधार ।

हर पल है अनमोल

– डॉ. त्रिलोकी सिंह,
प्रयागराज, उ.प्र.

जीवन की चिन्ताएँ तजकर, आगे बढ़ते जाना ।
हर पल है अनमोल समय का, व्यर्थ इसे न गँवाना ।।
समय-समय पर सुख-दुख दोनों,
आते ही रहते हैं ।
धैर्यवान सुख के समान ही ,
दुख को भी सहते हैं ।।
किसी परिस्थिति में भी मन को, निर्बल नहीं बनाना ।
हर पल है अनमोल समय का, व्यर्थ इसे न गँवाना ।। 1 ।।

निज जीवन के कर्त्तव्यों से,
कभी नहीं तुम भागो ।
श्रेष्ठ आदतें कभी न छोड़ो,
झूठ-कपट-छल त्यागो ।।
स्वार्थपूर्ति के लिए किसी का, दिल हर्गिज न दुखाना ।
हर पल है अनमोल समय का, व्यर्थ इसे न गँवाना ।। 2 ।।

लाभ-लोभ के चक्कर में पड़,
जीवन-धर्म न भूलो ।
धन-वैभव-सम्मान मिले तो,
मत गुमान में फूलो ।।
चार दिनों का जीवन पाकर, सबसे प्रेम बढ़ाना ।
हर पल है अनमोल समय का, व्यर्थ इसे न गँवाना ।। 3 ।।

जीवन में सुख-दुख दे करके,
समय परीक्षा लेता ।
यही समय आगे बढ़ने की,
हमें प्रेरणा देता ।।
साथ समय के चलकर अपने, जीवन को महकाना ।
हर पल है अनमोल समय का, व्यर्थ इसे न गँवाना ।। 4 ।।

भविष्य का धुंध

– श्री. वेदप्रकाश,
कपिलवस्तु, नेपाल

वैकेंसी का हाल अजीब–निराला
सालों बाद निकली और सीटें आधा–पौना
सरकार कहे ''युवा हैं देश का भविष्य''
पर भर्ती देखो लगता है भविष्य सिर्फ भ्रम–आभास ।

पेपर लीक, छात्रों का गुस्सा चढ़ा
सोचें ''क्यों न बनाएँ खुद ही प्रैक्टिस–शीट''
परीक्षा रद्द, मेहनत बेकार
जिम्मेदार लोग बन गए बस बहानेवाले ।

केंद्र मिले शहर से हज़ारों मील
पढ़ाई से ज़्यादा लगे यात्रा का खेल
गलत प्रश्नों पर बोर्ड रहा चुप
छात्र समझें ''ज्ञान नहीं, किस्मत है लोड'' ।

महँगी कोचिंग बन गई व्यापार
गरीब की मेहनत चली बेकार
माँ–बाप की उम्मीदें, घर की हालत
कब तक चलेंगे उधार की राहें ।

रिश्तेदार पूछें ''कब बने अफ़सर''
पड़ोसी हँसे ''अभी तक उमस में बसर''
सपनों पर ताने, मेहनत पे वार
युवा का मन टूटा बार–बार ।

उम्र की सीमा, तंग गली जैसी
जहाँ फँसी भीड़, लाठी–डंडे जैसी
तन थक गया, मन हारा, आँखें जलें
भविष्य की धुंध में सपने पलें ।

फिर भी रात–रात जागता जवान
दिल में लिए उम्मीदों का आसमान
सोचता ''कभी तो आएगी सुनहरी सुबह''
वरना यह संघर्ष ही लिखेगा उसका गुनाह ।

भारतीय रेल

– श्री. सूबेदार कृष्णदेव प्रसाद सिंह,
मधुबनी, बिहार

भारतीय रेल न कोयला खाती है न पीती है तेल,
कश्मीर से चलती है, और जाती है कन्याकुमारी ।
उत्तर पूर्व क्षेत्र भी जुड़ता जा रहा है बड़ी तेजी से,
अरुणाचल प्रदेश में जाने की, चल रही है तैयारी ।
भारतीय रेल.....

जहाँ किसी ने सोचा नहीं, वहाँ भी उछल रही है,
कोई कोना नहीं बचेगा, ये बात बिलकुल सही है ।
बड़ी तेजी से बढ़ रही है, अब गाड़ियों की संख्या,
इस प्रगति को, ध्यान से देखती है दुनिया सारी ।
भारतीय रेल.....

रेल का हर डब्बा एक छोटा सा भारत लगता है,
बड़ी खुशी होती है, जब कोई यह बात कहता है ।
ऐसा लगता जैसे, रेल मार्गों का जाल बिछ गया,
सीटी बजाती हुई रेलगाड़ी लगती बड़ी ही प्यारी ।
भारतीय रेल.....

नित दिन बहुत लोग, अपनों के पास आते हैं,
इसी तरह से कई लोग, अपनों से दूर जाते हैं ।
दिनोंदिन गाड़ियों में सुविधाएँ बढ़ती जा रही हैं,
यात्री सेवाओं में, तत्पर रहते हैं रेल अधिकारी ।
भारतीय रेल.....

சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான்
சபரி பேலஸ், 193, இரண்டாவது அக்ரஹாரம்,
சேலம்-636001. & 0427-4265414 0427-4552100
Website : https://shabari.in

வாணி விகாஸ் – ஓர் பார்வை .....

உங்களின் கேள்விகளுக்கு இதோ எங்கள் பதில்கள் .....

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்குரிய விண்ணப்பப் படிவங்கள் சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானின் உறுப்பினர்களுக்கு மட்டுமே வழங்கப்படும். வருடாந்திர உறுப்பினர் கட்டணம் ரூ.100/-

வாணி விகாஸ் தேர்வு எதற்காக நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் என்பதின் பொருளிலேயே இந்த வினாவிற்கான விடை இருக்கிறது. ஹிந்தி பேசத் தெரியாதவர்களை ஹிந்தியில் பேசவைப்பதே வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நோக்கமாகும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானால் நடத்தப்படுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு வாய்மொழித்தேர்வா அல்லது எழுத்துத்தேர்வா ?

பேச்சாற்றலை வளர்ப்பதே வாணி விகாஸின் கொள்கையாகும், எழுதுகின்ற வேலை இதில் கிடையாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான குறைந்தபட்ச வயது என்ன ?

எட்டு (8) வயது பூர்த்தியடைந்த அனைவரும் வாணி விகாஸ் தேர்வில் பங்கேற்கலாம். வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நிலை தேர்வில் பங்கேற்பவர்கள் விண்ணப்பத்துடன் தங்கள் பிறப்பு சான்றிதழ் நகலினை கட்டாயம் இணைக்க வேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான அடிப்படை கல்வித் தகுதி என்ன ?

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கென அடிப்படைக் கல்வித் தகுதி ஏதும் தேவை இல்லை.

வாணி விகாஸ் தேர்வு எந்தெந்த மாதங்களில் நடைபெறுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு ஜனவரி, ஏப்ரல், ஜூலை மற்றும் அக்டோபர் மாதங்களில் நடைபெறுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள் எத்தனை நிலைகளைக் கொண்டது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வானது எட்டு நிலைகள் கொண்டது.

வாணி விகாஸ் தேர்விற்கு தனியான பாடப்புத்தகம் உள்ளதா ?

வாணி விகாஸ் எட்டு நிலைகளுக்கும் தனித்தனியே பாட புத்தகங்கள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியுமா ?

ஆம். வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியும். ஒரே சமயத்தில் இரண்டு நிலைகளுக்கு விண்ணப்பிக்க இயலாது. நேரடியாக இரண்டாவது அல்லது அதற்கு அடுத்த நிலைக்கோ விண்ணப்பிக்க இயலாது. இரண்டாவது நிலையிலிருந்து எட்டாவது நிலை வரை விண்ணப்பிப்பவர்கள் தாங்கள் தேர்ச்சி பெற்ற முந்தைய நிலையின் 10 இலக்க தேர்வு எண்ணை (10 Digit Exam Register Number) தேர்வு விண்ணப்பத்தில் தெளிவாக எழுதி அனுப்பவேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மையங்கள் எங்கெங்கு உள்ளன என்று தெரிந்து கொள்ளலாமா ?

வாணி விகாஸ் தேர்வில் குறைந்தது 30 மாணவர்கள் இருந்தால் உங்கள் இடத்திலேயே தேர்வு மையம் அமைக்கப்படும். அதற்கும் குறைவாக 10 முதல் 29 வரை உள்ள நிலையில் தேர்வுமையக் கட்டணமாக ரூ.500 செலுத்த வேண்டும். **அவ்வாறான நிலையில் மற்றவர்களிடம் பயிலும் ஒரு சில மாணவர்கள் எவ்வித முன்னறிவிப்பின்றி தங்கள் தேர்வு மையத்தில் பங்கேற்பார்கள்.** தேர்வுமையக் கட்டணத்தை எக்காரணத்தைக் கொண்டும் திருப்பித் தர இயலாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் சான்றிதழ் உள்ளதா ?

ஆம், உள்ளது. வாணி விகாஸ் தேர்வு முடிந்து 30 நாட்களுக்குள் தேர்வு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் 60 நாட்களுக்குள் சான்றிதழ் அனுப்பி வைக்கப்படும். தேர்வு முடிவுகள் https://shabari.in-ல் வெளியிடப்படும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படும் ?

சபரியால் தேர்ந்தெடுக்கப்பட்ட அனுபவமிக்க ஆசிரியர்களால் தேர்வு நடத்தப்படும்.

இத்தேர்வுக்கான மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளதா ?

பாட புத்தகத்தின் கடைசிப்பக்கத்தில் மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மாணவர்களுக்கு பயனுள்ளதா ?

ஹிந்தியின் இமாலய வளர்ச்சி மற்றும் பயனுள்ள பயிற்சியில் மாணவர்கள் நிச்சயம் பலன் பெறுவர்.

புத்தகக் கட்டண விவரம் :

புத்தகத்தின் பெயர்	தொகை	புத்தகத்தின் பெயர்	தொகை
வாணி விகாஸ் நிலை-1	₹ 250.00	வாணி விகாஸ் நிலை-5	₹ 290.00
வாணி விகாஸ் நிலை-2	₹ 260.00	வாணி விகாஸ் நிலை-6	₹ 300.00
வாணி விகாஸ் நிலை-3	₹ 270.00	வாணி விகாஸ் நிலை-7	₹ 310.00
வாணி விகாஸ் நிலை-4	₹ 280.00	வாணி விகாஸ் நிலை-8	₹ 320.00

புத்தகக் கட்டணம் செலுத்துவது எப்படி ?

புத்தகக் கட்டணத்தை https://shabari.in என்கிற எங்களது இணையதளத்தின் வாயிலாக மட்டுமே செலுத்தவும்.

வாணிவிகாஸ் தேர்வுகளுக்கு (ஜனவரி [அ] ஏப்ரல் [அ] ஜூலை [அ] அக்டோபர் மாதங்களுக்கான தேர்வுகளுக்கு) குறைந்தபட்சம் ஒரு முகவரி (சபரி IDயில்) 10 மாணவர்கள் இருந்தால் மட்டுமே விண்ணப்பங்கள் ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

मूर्क नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

प्राचीन तमिलनाडु का सुन्दर प्रदेश था तोंड़ नाडु
वहाँ का एक भक्तिमय शहर था तिरुवेरकाडु
वेदपुरीश्वर नाम अपना कर सुख भरते जीवन में यहाँ महादेव
दूर–दूर से लोग आकर विनती करते भर देते कृपा कर
भक्ति अपने की शक्ति सब में यहाँ नहीं होती है
भक्ति को अपनाने उसमें जीत जाने की शक्ति अनोखी है
हर भक्त का तरीका एक–सा नहीं होता कभी यहाँ
हर भक्त के भक्ति अपनाने में महादेव सा देव और कहाँ ?

वेलालर कुल में जन्म लिए थे महादेव का ये भक्त
किसान थे खेत खलिहानों में ये जीवन बिताते
सबके प्रतीक प्यार और आदर भाव जन्म से ये पाते
दूसरों को कभी दुख ना पहुँचाकर ये लोग जीते
दूर से भी कोई व्यक्ति क्यों ना आवे उसे प्यार बहुत देते
जीवन में दूसरों का आदर करना ये लोग खूब जानते
नाम क्या था पता नहीं किसी को नाम पड़ा मूर्क नायनार
काम जो भी हो शिव धाम पहुँचने में सफल रहे मूर्क नायनार ।

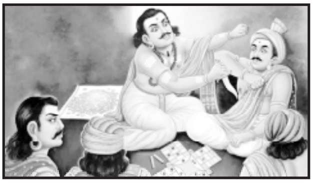

शिव भक्त की सेवा शिव महान उसी की सेवा है
दोनों में महादान आज भी अन्न दान वही सर्वश्रेष्ठ है
मानव का मन किसी और चीज से कभी न भरता
पेट भर जाने पर और क्या मानव खा सकता
सतृप्ति के साथ संतोष भी इसी में आता है
देनेवाला और खानेवाला दोनों का दिल भर जाता है
बस बस अब बस आगे कुछ नहीं चाहिए
संतोष हर मन में पड़ता है दिल वह भी खिलता है ।

शिव भक्तों को बुला बुलाकर खूब खिलाते थे मूर्क नायनार
दूर-दूर से भी आ जाते खूब खाते आशीर्वाद देते भक्त सारे
अन्य धन करते-करते दिल और हाथ नहीं थकता था
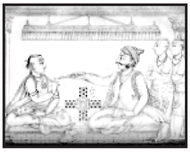
घर का भंडार सिकुड़कर बिलकुल खाली हो जाता था
बेच-बेचकर अपना सब कुछ दान किया ये करते थे
जब बेचने के लिए कुछ नहीं रहा तब खूब ये सोचे थे
अपनी पुरानी कला जुआ खेलने शुरू कर दिए
कमाने का एक नया रास्ता ये दिल से अपना लिए ।

पहली बार बाजी हार देते विजई तो बाद में यही हो जाते
अपने सामने जो भी हो खेल में यही सदा जीत जाते

बारिश-सी होने लगी तब संपत्ति की नित वर्षा
बारी-बारी से करते रहे अन्नदान वही थी एकमात्र इच्छा
शिव भक्त आप बहुत आने लगे दान का कर्म रहा निरंतर
भरपूर प्रयास से भर रहे थे भक्तों का नित पेट
अपने लिए अपने सुख के लिए जुआ नहीं खेलते थे
जितने भी पैसे मिलते उन सबको अनुदान में खर्चा करते थे ।

कभी-कभी जब सामनेवाला हार कर रुपए नहीं देता है
गुस्से में सामने वाले को यह मांर भी डालते थे
जब अपने नगर के सब के सब डर गए खेलने से रहे
तब दूसरे नगर जाकर खेलते थे धन ये लाते थे
अपने जीवन पर अनुदान कर शिव भक्त के भरते पेट
शिव नाम से सदा अपना कर जीते थे ये सदा ही नेक
शिवपद मिला शिव की पूरी कृपा मिली इनको
कौन कब रोक सके जिस पर महादेव की कृपा हो उसको ?

मूर्क नायनार भक्त, अन्नदान किए नित ।
भरपेट खिलाकर सतत, पाए अतुल शिव पद ।।

मन का न्यायालय

– एडवोकेट डी.के.कनोजिया,
दिल्ली

सबसे बड़ा न्यायालय हमारा मन होता है,
क्या सही है और क्या गलत उसे सब पता होता है ।
यहाँ गवाह भी हम हैं, अपराधी भी हम,
और न्यायाधीश भी हमारी ही आत्मा का एक स्वर होता है ।
जब कोई झूठ बोलता है, शब्द नहीं, मन काँपता है,
सत्य की आहट से ही भीतर कुछ बदल जाता है ।
कोई देखे न देखे, मन सब देख लेता है,
हर पाप, हर छल, हर मौन को लिख लेता है ।
कानून के दायरे बाहर भी जो अपराध हैं,
उनका मुकदमा यहीं, इस हृदय के भीतर होता है ।
यहाँ न कोई जमानत, न कोई सफ़ाई,
सिर्फ़ आत्मस्वीकार ही सज़ा या मुक्ति का उपाय होता है ।
कभी जब हम खुद से नज़र मिलाने में डरते हैं,
तब समझो मन का न्यायालय सुनवाई पर होता है ।
और जब अंतरात्मा मुस्कुरा दे शांति से,
तब जानो फैसला सही हुआ होता है ।
सबसे बड़ा न्यायालय हमारा मन होता है,
क्योंकि ईश्वर वहीं बैठा मौन, मगर साक्षी होता है ।

वो शख़्स दर्पण था

– एडवोकेट डी.के.कनोजिया,दिल्ली

वो शख़्स दर्पण था,
जिसकी आँखों ने
मेरा सबसे सुंदर स्वरूप देखा
जब मैं खुद को
धूल–धूसरित, टूटा–थका समझता था ।
उसने मेरे भीतर छिपे
अनकहे उजाले को पढ़ लिया,
और मैं हैरान था
कि किसी की नज़र
इतनी सच्ची भी हो सकती है ।
उसने मुझे मुझसे बेहतर जाना,
मेरी चुप्पियों में अर्थ खोजे,
और जब मैं मौन हुआ
वो मुस्कराया,
जैसे उसने मेरे मन की बात सुन ली हो ।
अब जब वो दर्पण नहीं रहा,
मैं खुद को पहचानने की कोशिश करता हूँ
पर हर बार चेहरा बदल जाता है,
क्योंकि सबसे सुंदर मैं
तो उसकी आँखों में ही था ।

अहमक

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़

मुझे अहमक ही रहने दो
भई पढ़ा लिखा हूँ मैं
और तुम कहते रहे हो मुझे अनपढ़ गंवार,
क्योंकि मेरे इसी रूप से है तुझे प्यार,
गर मैंने बोल दिया सारी बातों का सार,
तक्षण पड़ सकते हो बुरी तरह बीमार,
आपकी हर झूठ, हर अदा का दीवाना रहा हूँ,
तुम्हारी तो तुम्हारी खुद की नज़र में भी
गधा और हकीकत से बेगाना रहा हूँ,
यदि मैंने तर्क करना शुरू कर दिया,
आपके असत्यों पर सच का चादर भर दिया,
तो कर नहीं पाओगे अपनी मनमानी,
जो धंधा रहा है तुम्हारा खानदानी,
सब कुछ सुन रहा हूँ चुपचाप
जिन्हें जो कहना है कहने दो,
हाँ अभी मुझे अहमक ही रहने दो,
जिस दिन मेरा बंद मुँह खुल गया,
जिस दिन मैं अपनी मनमानी पर तुल गया,
खत्म कर दूंगा तुम्हारा पाखंडवाद,
हो जिसके जरिये सदियों से आबाद,
अपने तर्कों से जब शुरू कर दूँ उड़ाना
बोयी गई तेरे असत्यों की धज्जियाँ,
लग सकता है थोड़े से समय ज्यादा
हर कुतर्की कटेंगे जैसे हरी सब्जियाँ,
जिस दिन लाऊँगा जलजला
ढह जायेगा भरभरा तेरा गप्पों का पहाड़,
धू धू कर जलेंगी आस्था के भीतर
छुपे हुए सारे के सारे तेरा कबाड़,
बचपन से अब तक सब्र ही तो किया है
ज़रा-सा और सब्र मुझे सहने दो,
हाँ अभी मुझे अहमक ही रहने दो ।

क्या है ?

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

कहने को क्या है ? कहो कुछ भी, मना नहीं है कुछ भी
सुन्ने को क्या बाकी है ? सुनाओ सुनाते रहो असर पड़ेगा नहीं
जो भी बकना चाहते हो बक लो, दिल तो बदलनेवाला नहीं
डॉट डपड़ने पर भी असर नहीं पड़ा तो मार भी शुरू कर लो
भावनाओं को बहने दो चाहे वह शब्द से हो या प्रहार से कर लो
तुम्हारे कुछ भी करने से मन नहीं बदलनेवाला है न माननेवाला है
अगर इन चीजों से जी नहीं भरता जो भी करना चाहते हो कर लो
असर नहीं पड़ेगा कुछ बदल नहीं पाएगा बना रहेगा वैसे के तैसे ।

बच्चा नहीं हूँ जो तेरी हर बात मानकर, चुप रह जाऊँ
बड़ा हो गया हूँ भावनाओं में सदा डूबने भी लगा हूँ हर रोज
डराकर बदल नहीं सकोगे कभी अपना काम निभा नहीं सकोगे
प्यार बरसा कर भी अब तुम कुछ बदल नहीं सकोगे सिर्फ थकोगे
बीत गए इतने सारे दिन दिल में और किसी का स्थान नहीं
बिता रहा हूँ हर पल बड़ी मुश्किल से मैं नित उसके बिन
दिल जब टूट जाता है अपना आधार वह भूल जाता है
बिन शोक के कुछ और भाव से वह अपने पास न लाता है ।

दिल जिसका टूट गया है उसके पास और रखा ही क्या है ?
बिना दिल के दुनिया के किसी और चीज में रस ही क्या है ?
मन जब महकने लगता है तब हर चीज यहाँ खिलता है
मन जब खुशियों से भरा है तब सब कुछ अच्छा लगने लगता है
मन में दर्द जब भर जाता है तब मानव में बचा ही क्या है ?
शोक में जब आदमी डूब जाए तब उसे बचाने का मार्ग ही क्या है ?
जीवन में जब प्यार को स्थान नहीं तब जीना ही क्या है ?
प्यार के बिन इस बड़ी दुनिया में बोलो यार जीवन ही क्या है ?

माँ तेरी महिमा महान है

– श्री. अशोक पटेल 'आशु',
शिवरीनारायन, छत्तीसगढ़

माँ तेरी महिमा महान है, तू ही ममता की खान है
यह जग भले ही ठुकरा दे, पर रहता तेरा ध्यान है ।
माँ के लिए न कोई छोटा है न बड़ा, सब समान है
जो झुके हैं माँ के दर पर, उसको मिलता वरदान है ।

माँ तो आखिर माँ है, माँ का सबसे ऊँचा स्थान है
जो देखे मूरत में माँ को वही भक्त सच्चा इंसान है ।
जो माँ को न समझे वो तो नासमझ और नादान है
माँ की मूरत से, माँ की ममता में, रिझते भगवान है ।

झुकाले माँ के चरणों में शीश मिलेंगे चारो धाम है
भगवान का दूसरा स्वरूप होता माँ का ही नाम है ।
इस जहाँ में कहीं कुछ नही, सिर्फ माँ अभिराम है
माँ में ही सब कुछ उसी, मिलता सुख अविराम है ।

संबंधों की बगिया

– डॉ. शारदा प्रसाद,
रामगढ़ कैंट, झारखंड

संबंधों की बगिया है उजड़ी
फूल–पत्ते भी चुप–चुप हैं !
बसंती बयार भी भटकी हुई
सुख–बादल भी गुमसुम हैं !!

नदिया संवेदना की सूख गयी
उजड़े–उजड़े कूल–किनारे !
सूखी नदिया में नौका डूब रही
मांझी है कौन जो इसे उबारे !!

चाटुकारी ही अब दीन–धरम
यही लगता बहुत ही प्यारा है !
कर्म–ईमान को जो रखे साथ में
उसका अब नहीं गुजारा है !!

जो फकैत, निज कर्म से भागे
बस जी–हुजूरी ही करते हैं !
चरण छूकर, चारण गाकर
उल्लू सीधा अपना करते हैं !!

जो समर्पित निज कर्म को
सजा उन्हीं को मिलती है !
सच को झूठ, झूठ को सच
कथा नयी फिर चलती है !!

रिश्तों की सिलाई टूट ही जाती
जो स्वार्थ के धागे से सिलते हैं !
जो प्रेम से उधड़न को सिल दे
ऐसे रफूगर कहाँ अब मिलते हैं !!

दीप पर्व

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन,
मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

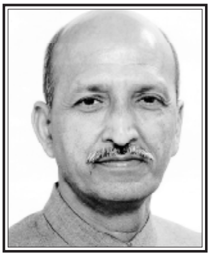

प्यार और उल्लास का पर्व दिवाली,
ख़ुशियों के त्योहार का पर्व दिवाली ।
राम अयोध्या आगमन, ख़ुशी मनायें,
तम मिटाने का अवसर पर्व दिवाली ।
नयी फ़सलों का पर्व किसान खुश है,
ख़ुशहाल राष्ट्र जन जन, पर्व दिवाली ।
समुद्र मंथन से माँ लक्ष्मी प्रकटीकरण,
लक्ष्मी माँ के स्वागत का पर्व दिवाली ।
नरकासुर से राजकन्याओं की मुक्ति,
सुभद्रा की सामर्थ्य का पर्व दिवाली ।
दैत्य राज बालि पर वामन की विजय,
महावीर की ऐहिक लीला पर्व दिवाली ।
विश्व पटल पर मने दिवाली दीप जलें,
तम मिट जाये चहुँओर, है पर्व दिवाली ।
अमावस्या का गहन तम भी विचलित है,
पूर्णिमा का अहसास कराता पर्व दिवाली ।
प्रत्येक वर्ग खुश आज, धन धान्य की वर्षा,
शरद ऋतु का स्वागत करता पर्व दिवाली ।

बाल कविता

जोकर

– श्री. राजकुमार
जैन राजन,
चित्तौड़गढ़, राज.

अजब–गज़ब हरकत करके
सब लोगों को खूब हँसाये
सर्कस का यह जोकर निराला
तरह तरह के खेल दिखाये ।
ऊँची टोपी, लंबी नाक
ढीली ढाली उसकी पोशाक
देख–देख उसके करतब
बच्चे रह जाते हैं अवाक ।
दिखने में वह बौना लगता
मस्त मलंग छौना लगता
कभी कूदता कभी लौटता
जैसे एक खिलौना लगता ।
खुद हँसता, सबको हँसाता
लगता वह सर्कस का हीरो
सबको खुशियाँ वही बाँटता
उसके बिना सब खेल ज़ीरो ।

सब तोड़ अपनी राह चले

– डॉ. निशा नंदिनी भारतीय,
तिनसुकिया, असम

दोनों का पथ अलग–अलग
फिर कैसी प्रेम–प्रीति प्रिय,
कल जुड़े फेरों के बंधन में
आज सब तोड़ अपनी राह चले ।

तुम जान न पाए मुझको
मैं जान न पायी तुमको प्रिय,
जीवन एक पहेली बना
सुख–दुख दोनों ने अलग सहे ।

हक से पकड़ा हाथ तुम्हारा
अकिंचन समझा तुमने मुझे,
मैं आत्म–समर्पण को तरसी
तुम अभिमान से अड़े रहे ।

ओढ़े लोक–लाज की चादर
तुम आत्ममुग्ध हो खड़े रहे,
विजय–पराजय के चक्कर में
दोनों ही जीवन हार चले ।

ढके अहंकार की छाया से
तुम अज्ञानी–अनजान रहे,
अभिशाप बना जीवन सबका
करुणा–ममता सब त्याग चले ।

समझ न पाया प्रेम बंधन को
दोनों का उन्माद प्रिय,
न्यौछावर कर प्राण अपने
सब कुछ दे दिया प्रिय तुम्हें ।

क्षमा किया मैंने तुमको
तुम भी क्षमा कर देना प्रिय,
आँख खुले जब प्रात तुम्हारी
बिसरा देना विगत प्रिय ।

जन्म दूसरा पा जाऊँ
पर मिलूँ न कभी तुम्हें प्रिय ।
जहाँ रहो सानंद रहो
रूह देती आशीर्वाद प्रिय ।

ग़ज़ल

– डॉ. तेजिंद्र,
कैथल, हरियाणा

कोई हमें बुलाये तो ।
हँसकर गले लगाये तो ।
माना नहीं हमें शिकवा,
फिर भी हमें मनाये तो ।
कोई चले, बढ़े आगे,
कोई अलख जगाये तो ।
सुनते रहा सदा सबकी,
अपनी हमें सुनाये तो ।
आँगन हरा–भरा होगा,
पौधा नया लगाये तो ।
तू बस मुझे बता देना,
कोई तुझे सताये तो ।
आता नहीं हमें जीना,
कोई हमें सिखाये तो ।

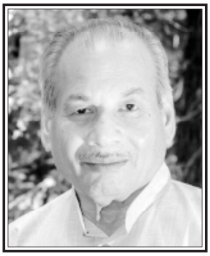

मानव जीवन सर्वोत्तम

– डॉ. कर्नल आदि शंकर मिश्र
'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

धन्यवाद आभार प्रभू को जिसने इस
जीवन में मनुष्य का रूप दिया है,
आँख, कान देखने सुनने को, जीभ
दाँत स्वाद चखने के लिए दिया है ।
हरएक कौर उदर तक पहुँचाने का
प्रभु ने कितना सुंदर प्रबंध किया है,
ठंडा–गर्म उँगलियाँ बतला देती हैं,
तीखा– मीठा जिह्वा बतला देती है ।
नासिका सूँघ लेती है बासी–ताज़ा
सख़्त मुलायम दांतों को मिले मज़ा,
कैसे मिल पाता है यह रोज़ निवाला,
बेईमानी का है या नैतिकता वाला ।
यह निश्चय करने की बुद्धि भी दी है
ईश्वर ने मानव जन्म हमको देकर,
सारे जीवों में सर्वोत्तम मानव शरीर में
हमें आपको सब को श्रेष्ठ जन्म देकर ।
जैसा बोवोगे वैसा ही काट सकोगे
बीज और फसल भी स्वयं चुनोगे,
आदित्य खुद अनैतिक राह चलोगे
या फिर खुद ईमान का मान रखोगे ।

बचपन

– डॉ. कर्नल आदि शंकर मिश्र
'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

बचपन से ही जिसके सिर पर
पिता का हाथ होता है,
वह पुत्र भाग्यवान होता है ।
वह पिता शक्तिवान होता है ।
जो पिता के पैरों को छूता है,
वो कभी गरीब नहीं होता है,
जो माँ के पैरों को छूता है,
वह पुत्र खुश नसीब होता है ।
जो भाई के पैरों को छुता है,
वो कभी गमगीन नही होता
जो बहन के पैरों को छूता है,
वह चरित्रहीन नहीं होता है ।
आदित्य अच्छा दिखने को नहीं,
अच्छा बनने के लिए जिओ,
बचपन से सदैव सबका और
सभी बुजुर्गों का सम्मान करो ।

பரிச்சயா மற்றும்
ப்ராத்மிக் முதல்
பிரவீண்
வரையிலான
தேர்வுகளுக்குரிய
Q & A & கைடுகள்
விற்பனைக்கு
தயாராக உள்ளது.

बाल दिवस विशेष

बच्चे बन जाएँ

– श्री. अशोक आनन, शाजापुर, म.प्र.

बच्चों में बच्चे बन जाएँ ।
बच्चों में हम घुल – मिल जाएँ ।
बच्चों से हम बच्चों जैसी –
बातें कर, क्यों हम शरमाएँ ।
बच्चों की है अपनी दुनिया ।
बच्चों की हैं अपनी खुशियाँ ।
बच्चों से ही महके जग में –
बड़े–बड़ों की सूखी बगिया ।
बच्चों के संग खेलें–कूदें ।
बच्चों जैसे हम सब रूठें ।
बच्चों जैसे बनकर सच्चे –
बच्चों को ही हम सब पूजें ।
बच्चे ही हों धर्म हमारे ।
बच्चे ही हों कर्म हमारे ।
ज़ुल्म इन पर हो कभी न –
बच्चे फूलों–से नर्म हमारे ।
आओ ! इनका भविष्य संवारे ।
इन पर अपना सब कुछ वारें ।
बच्चा अब न कोई रोए –
बच्चा जीवन से अब न हारे ।
बच्चे ही हैं भविष्य हमारे ।
बच्चे चंदा–सूरज–तारे ।
बच्चों से है खुशी हमारी –
बच्चों में हम समय गुज़ारें ।

जीवनसाथी तुझे प्रणाम

– श्री. नरेश कुमार गुप्ता 'खैरी', मंगलौर, कर्नाटक

मेरी प्यारी जीवनसाथी,
तुझसे मेरी दुनियादारी,
तू ही मेरे प्यार का सागर,
तू ही आँगन की फुलवारी ।
तेरा व्रत है मुझको अर्पित,
प्रतिक्षण करता मुझको गर्वित,
मेरे जीवन का पल–पल मैं,
करता हूँ बस तुझे समर्पित ।
मेरे हदय के स्पंदन,
करते सादर तेरा वंदन,
मेरी जीवन रेखाओं का,
तेरे हाथों में ही प्रबंधन ।
मेरी मंज़िल और लक्ष्यों को,
देने हेतु नए आयाम,
हर पल लगी रहे तू,
कभी न दे खुद को विश्राम ।
मेरे विचलित मन की नैय्या,
तू ही पार लगाती है,
तेरी सच्ची सुलझी बातें,
मन का अवसाद मिटाती हैं ।
तेरी कठिन तपस्या का,
कैसे अहसान चुकाऊँगा,
तेरे प्यार की हथकड़ियों में,
हर पल बंधना चाहूँगा,
हर पल बंधना चाहूँगा ।

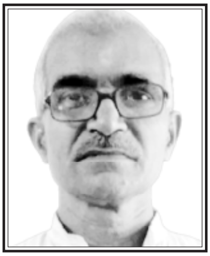

गीत

तुम बहुत ही याद आए

– डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय,
प्रयागराज, उ.प्र.

दर्द के बादल उमड़ कर
आँख में ऐसे समाये
मौन व्याकुल इस हृदय में
तुम बहुत ही याद आये

प्यार का मकरंद घोले
जो विहंसता था यहाँ
रूप वह भोला सलोना
आज खोया है कहाँ

दीप स्मृति के जलाकर
द्वार पर मैंने सजाये
मौन व्याकुल इस हृदय में
तुम बहुत ही याद आये

अमराइयों की छाँव में जो
कल सुनहरे पल बिताए
प्रश्न अनसुलझे बहुत थे
पर तुम्हीं ने हल सुझाये

शब्द तुमसे ही चुराकर
गान भ्रमरों ने सुनाए
मौन व्याकुल इस हृदय में
तुम बहुत ही याद आये

लहर गिनना या अकेले
बैठ यादों के झरोखे
जिन्दगी ने प्यार में
अनगिनत खाए हैं धोखे
पर तुम्हारा पत्र ही है
जो सदा ढाढ़स दिलाए
मौन व्याकुल इस हृदय में
तुम बहुत ही याद आये

भगवान

– श्री. मोहित.जे. संतोष, श्री रामकृष्ण कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोवै, तमिलनाडु

लोग हँसेंगे
फिक्र नहीं
लोगों के विचार
उसका भी फिक्र नहीं ।
उदास नहीं रहूँगा मैं
हर दम आगे चलूँगा मैं
चिंता करके फायदा क्या ?
उसे भी तुम तोड पाओगे ।
हिम्मत से बडो आगे
भगवान रहें तेरे साथ
अपना कर्म तुम निभाओ
बनाओ एक नया इतिहास ।
तेरे कदमों है सब कुछ
तेरे प्रयासों में बहुत कुछ
हो जायेगा मुसीबतों का अंत
खूब खिलेगा तब नया वसंत ।

नवगीत

– डॉ. अर्जुन गुप्ता 'गुंजन', प्रयागराज, उ.प्र.

मौन अकेली ढली शाम को
दुबका देखे बहता
कर पुरुषार्थ सदा ही मानव
जीवन संवर्धित हो
अथक परिश्रम से जीवन नित
हरा-भरा पोषित हो
कैसे होगा जीवन उज्ज्वल
सदा सोचता रहता
मौन अकेली ढली शाम को
दुबका देखे बहता
जीवन की अब शाम हो गयी
झड़े सुनहरे पत्ते
नित्य अँधेरा झुर्री तन पर
फटे पुराने लत्ते
घरवालों की डांटे सुनता
अनुचित भी नित सहता
मौन अकेली ढली शाम को
दुबका देखे बहता
बीते पल की याद सताती
बूढ़ा बरगद कहता
झंझावाती पल सहने की
हिम्मत अब नित ढहता
मन की बात सदा मन में ही
नित्य दबाये रहता
मौन अकेली ढली शाम को
दुबका देखे बहता
सभी मुसाफिर हैं जीवन में
मंजिल ईश का डेरा
रैन बसेरा दो दिन का जग
हरपल भ्रम का फेरा
पानी का बुलबुला न जाने
कब तक साँसें भरता
मौन अकेली ढली शाम को
दुबका देखे बहता

क्यों न अज्ञानता को मिटाएँ

– कैप्टन डॉ. जय महलवाल (अनजान), बिलासपुर, हि.प्र.

चलो घी के दीपक जलाएँ,
जलाएँ नए ऊर्जा उत्साह से,
चलो दिवाली मनाएँ ऐसे,
मनाएँ एक नए अंदाज़ में ।
जगमग जगमग रौशन हो,
ऐसे दीपक जलाएँ हम,
चलो दिवाली मनाएँ ऐसे,
मनाएँ एक नए अंदाज़ में ।
क्यों अज्ञानता को मिटाएँ,
ज्ञान के नए दीप जलाएँ,
चलो दिवाली मनाएँ ऐसे,
मनाएँ एक नए अंदाज़ में ।
पटाखे फुलझड़ियों का प्रदूषण रोकें,
तेल घी के दीपक जलाएँ,
घरों को रंगों की रोशनी से सजाएँ,
दीवाली मनाएँ नए अंदाज में ।

तो अच्छा लगा

– डॉ. प्रमोद कुमार 'अनंग',
गाजीपुर, उ.प्र.

प्यार के गीत गाया, तो अच्छा लगा ।
साथ में गुनगुनाया, तो अच्छा लगा ।।

मेरे बापू को फुर्सत ही, मिलती नहीं ।
पास अपने बिठाया, तो अच्छा लगा ।।

आजकल लोग कुछ भी, बताते नहीं ।
हाल अपना सुनाया, तो अच्छा लगा ।।

अच्छे लगते हैं बच्चे, जो हँसते मिलें ।
वह मुझे भी हँसाया, तो अच्छा लगा ।।

आते रहते हैं घर पर, सगे मित्र सब ।
पर पड़ोसी बुलाया, तो अच्छा लगा ।।

सुन के शैतानियाँ, माँ ने डांटा बहुत ।
रो के माँ ने रुलाया, तो अच्छा लगा ।।

वह बहुत ही करीबी है, मेरा मगर ।
गलतियाँ भी गिनाया, तो अच्छा लगा ।।

मैं तो बचपन में ही, इस शहर आ गया ।
गाँव जब याद आया, तो अच्छा लगा ।।

जाति–मजहब का नेता, खड़ा हो गया ।
'आदमी' ने हराया, तो अच्छा लगा ।।
''अनंग''

पाठकों के पत्र ...

बहुत सुंदर पत्रिका !

इस अंक में दक्षिण भारत के अनेक लेखकों को पढ़कर बहुत अच्छा लगा । हिन्दी के स्त्रीलिंग और पुल्लिंग के प्रयोग में उत्तर भारत की शैली से थोड़ा अंतर अवश्य दिखाई दिया, परंतु वह भावों के सौंदर्य के आगे बाधा नहीं बना ।

यह देखकर भी अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि इस अंक में अनेक युवा लेखक सम्मिलित हैं और वे विविध विषयों पर कविताएँ लिख रहे हैं ।

इस सफल अंक के लिए आपको हार्दिक बधाई ! सादर ।

– डॉ. शैलजा सक्सेना, कनाडा

सादर प्रणाम आदरणीय ।

अक्टूबर माह की पत्रिका प्राप्त हो गई । आजकल के पिछलग्गू (चापलूसी करनेवाले) लोगों पर लिखे संपादकीय को पढ़कर मन अत्यंत द्रवित हो गया ।

मैंने पूरी पत्रिका का अवलोकन किया, जिसमें दो–तीन कविताएँ विशेष रूप से बहुत अच्छी लगीं । आपने हिन्दी की जो मशाल जलाई है, वह अपने भाषाई ज्ञान से हम सभी को प्रकाशित कर रही है ।

आपके इस उत्कृष्ट कार्य के लिए मेरा सहृदय धन्यवाद, आदरणीय ।

– श्री. विमल कुमार, पूर्णियाँ, बिहार

आदरणीय एम. श्रीधर जी, सादर प्रणाम ।

व्हाट्सएप के माध्यम से ''शबरी शिक्षा समाचार'' का अक्टूबर अंक प्राप्त हुआ ।

संपादकीय में आपने धार्मिक एवं अभिनेताओं की अत्यधिक भीड़ भरी रैलियों और कार्यक्रमों में होनेवाली दुर्घटनाओं की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया और भीड़ से बचने की महत्वपूर्ण सलाह दी है ।

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री अत्यंत उत्कृष्ट है । मुझे विशेष रूप से निम्नलिखित रचनाएँ बहुत अच्छी लगीं ।

आर.जे. संतोष कुमार का आलेख: जो भाषा के प्रति दुराग्रह को भाषाई सद्भाव में बदलता है ।

विनोद कुमार विक्की का हास्य-व्यंग्य आलेख ।

सुनील प्रकाश भारद्वाज की ग़ज़ल ।

शिव-भक्त संत दंडी आर्डगल नायनार के बारे में जानकारी देता लेख ।

राजकुमार जैन की बाल कविता ''जोकर'' ।

तेज नारायण राय की कविता ''मेरी कविता रोटियाँ नहीं दे सकती'' ।

डॉ. लता अग्रवाल तनेजा की मुक्तछंद कविता ''संवेदना सूखे पत्तों की'' ।

संस्कृत भाषा में दिए गए दो वृत्तांत ।

मैं ''शबरी शिक्षा समाचार'' पत्रिका का तब से पाठक हूँ जब यह डाक के पते पर घर आया करती थी । इतने लंबे समय के बाद पत्रिका में प्रकाशित सामग्री पर प्रतिक्रिया दे रहा हूँ ।

''शबरी'' के इस राष्ट्र स्तरीय बहुभाषी अंक के सफल प्रकाशन पर आपको बहुत-बहुत बधाई !

– डॉ. तेजिंद्र, कैथल, हरियाणा

आदरणीय श्री एम. श्रीधर जी, सादर नमस्कार ।

आपकी पत्रिका, 'शबरी', वास्तव में अतुलनीय है और आप इसके लिए हार्दिक बधाई के पात्र हैं ।

जिस प्रकार शबरी को प्रभु श्री राम की प्रतीक्षा थी, ठीक उसी प्रकार मुझे भी आपकी पत्रिका 'शबरी' के नवीन अंक की प्रतीक्षा रहती है । जब मुझे अक्टूबर अंक को देखने और पढ़ने का सौभाग्य मिला, तब मेरी वह प्रतीक्षा पूर्ण हुई ।

सरल, सहज और बोधगम्य भाषा में प्रकाशित यह पत्रिका दक्षिण भारत में हिन्दी भाषा की अलख (जागरूकता) जगा रही है । विशेषकर सलेम, तमिलनाडु में आपका यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है ।

पत्रिका में प्रकाशित उत्कृष्ट कविताएँ मन को हर्षित करती हैं । आपकी समस्त रचनाएँ उच्च स्तरीय हैं । इस हेतु समस्त रचनाकार और यशस्वी संपादक (आप स्वयं) बधाई के पात्र हैं । उनकी सारस्वत साधना को मेरा शत-शत नमन ।

सादर ।

– श्री. डॉ. सत्येन्द्र सुमन, पटना, बिहार

अमृत हिन्दी, निर्मल संस्कृत,
अतुल तमिल की वाहिका...
शबरी शिक्षा समाचार पत्रिका...
इस साहित्य यात्रा में जुड़िए...
और साहित्यकारों को जोड़िए...

नवांकुर

जीजू

– लक्षिता श्रीधर,
ग्यारहवीं कक्षा, एमराल्ड वैली पब्लिक स्कूल, सेलम, तमिलनाडु

हर एक जीजू अपने साली या साला के जीवन में बहुत ज्यादा परिवर्तन लाते हैं। ऐसे ही मेरे जीजू भी मेरे जीवन में एक परिवर्तन लेकर आए। जब मेरी दीदी की शादी होनेवाली थी तब मैंने सोचा था कि कोई आएँगे और मेरी दीदी को मुझसे दूर लेकर जाएँगे। किंतु फिर समझ आया कि मेरे जीजू ऐसे नहीं है। मेरी दीदी की शादी होने पर, उनके रूप में मुझे एक नया भैया मिले थे। उन्होंने मुझे बहुत कुछ सिखाया, मेरे साथ खेला और नये प्रकार के खाना खाने में साथ दिया। मैंने हमेशा सोचा है कि मेरी दीदी की शादी के बाद मैं उसके साथ ज्यादा वक्त नहीं बिता पाऊँगी। किंतु उन्होंने ऐसा होने नहीं दिया। धन्यवाद जीजू।

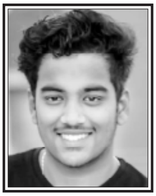

एक बार फिर से

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै,
तमिलनाडु

एक आदमी रहा
गाँव छोड गया
बडा अफसर बना
जीवन सदा चमका।

गाँव आया सालों बाद
हर कहीं हुआ था बरबाद
हृदय उसका रुक गया
गाँव उजडा–सा रह गया।

पक्षी नहीं रहे वहाँ
जानवर भी कम मिले
करने लगे लोग मजदूरी
कहीं नहीं रहे किसान।

हाल बदलने को ठान
उतर गया वह खेत में
बीज बोने लगा तब से
बिछाने हरियाली वहाँ।

देख उसे लोग मिल गये
काम उसके साथ करने लगे
फिर से बना गाँव वह महान
खेत खलिहान खिलने लगे।

नवांकुर– रचनाएँ आमंत्रित

रचयिता की आयु 21 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। रचना मौलिक व अप्रकाशित होनी चाहिए। खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग करें। रचना 50 से 150 शब्दों में होनी चाहिए हैं।

कृपया आयु प्रमाण–पत्र की प्रति साथ भेजें।

समुद्र और रेत

– शंकर वेंकटेश्वरन,
श्री कृष्णा आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज़, कोवै, तमिलनाडु

जिंदगी में सब बार-बार सोचते रहते हैं कि दूसरे लोग उनके बारे में क्या सोचते हैं ? जब हम कोई कुछ बोलते हैं या कुछ काम करते हैं, हर चीज़ हम पर हम हमेशा सोचते रहते हैं । इन सब के लिए हम एक छोटी कहानी से समझ सकते हैं कि यह सोच हमारे लिए अच्छी या बुरी होती हैं । एक दिन एक औरत ने अपनी पति को समुद्र में खो दिया । रोते हुए उसने रेत पर लिखा, समुद्र एक हत्यारा है । उसी दिन, एक मछुआरे ने अपने जीवन की सबसे अच्छी मछली पकड़ी । उसने मुस्कुराते हुए रेत पर लिखा, समुद्र मेरा अन्नदाता है । उसी दिन एक लड़के ने अपने जूते को समुद्र में खो दिया । उसने जोर से चिल्लाया कि समुद्र एक चोर है । थोड़ी देर बाद, एक बूढ़े आदमी को किनारे पर एक मोती मिला । वह खुश हुआ और लिखा, समुद्र बड़ा उदार है ! चार कहानी, चार विचार, लेकिन सिर्फ एक समुद्र । और फिर एक बड़ी लहर आई और रेत पर जो कुछ लिखा था उसे मिटा दिया । सच तो यह है लोग हमारे बारे में जो कहते हैं, वह असल में हमारे बारे में नहीं होता । यह उसके बारे में होता है कि उन्होंने क्या पाया या क्या खोया । समुद्र की तरह रहना, लोग हमेशा कुछ बोलते रहते हैं । उनकी लहरों को अपने उद्देश्य को डूबने न दें ।

तुमको तुझ में नहीं
मुझ में पाना चाहता हूँ
मुझ में नहीं मिले तो
तुझ में मुझे चाहता हूँ
नचा लिया खूब तुमने मुझे
बचाया करो अब तो सही
दुनिया के खेल से थक गया हूँ
ले जाओ साथ अपना अब तुम
कुछ और नहीं चाहिए बस मुझे
चरण दो अपना शरण दो मुझको हे प्रभु

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

आत्मविश्वासः

किञ्चित् अवकाशं ग्रहीतुं स्वामी विवेकानन्दः पेरिस्–नगरे अश्वआबन्ध पथिकयानं भाडेन स्वीकृत्य तस्य शिष्यायाःयूरोपीय–महिलायाः सह यात्रां कृतवान् ।

एकस्मात् वीथितः यानं गच्छति स्म । तदा अतीव धनिक परिवारस्य सदस्या इव वेषधारिणी एका महिला, द्वौ बालकौ गृहीत्वा गृहात् बहिरागता ।

चालकः यानमवरुद्ध्य, अवतीर्य, बालकान् प्रेम्णा आलिङ्गितवान् । तदा पुनः याने आरोहितवान् । स्वामीजी तस्य शिष्या च अतीव आश्चर्यचकितौ अभवताम् । अन्ततः तस्य शिष्या चालकं प्रति पृष्टवती भो ! ''किं भवान् जानासि यत् तौ बालकौ के स्तः ?''

चालकः ''आम् । तौ मम बालकौ एव । इत्यवदत् । किं भवता पेरिस नगरे.... इति बैंकस्य विषये श्रुतम् ?'' इति पृष्टवान् । ''श्रुतमेव । तत् महत् बैंक आसीत्, अस्माकमपि तत्र लेखा आसीत् । परन्तु अधुना तत् बैंकक्रप्ट अभवत् इति भाति'' इति शिष्या अवदत् ।

एतत् श्रुत्वा चालकः ''अहमेव तस्य बैंकस्य स्वामी । सम्प्रति बैंकस्य स्थितिः अतीव कठिना अस्ति, ऋणानां संग्रहणं, परिशोधनं च कर्तुं किञ्चित् समयःस्यात् इति भाति । एवं सति अहं परेषां भारं न भवितुम् इच्छामि । स्वगृहनगरे एकं लघु किन्तु आरामदायकं गृहं भाडेन गृहीतवान् । मम भार्यायाः मम च यत् वस्तूनि आसन् तत् विक्रीय एतत् यानं क्रीतवान् । तं भाटकायान रूपेण चालायामि । मम भार्या अपि किञ्चित् अर्जयति, बालकानां व्ययः च अस्माकं द्वयोः आयः पर्याप्तं भवति । अन्येषां दें धनं समाहृत्य ऋणं परिशोधयित्वा पुनः बैंकं उद्घाटयिष्यामि'' इत्यावोचत् ।

एतत् श्रुत्वा स्वामीजी प्रहृष्टः सन् उक्तवान् ''अयं पुरुषं पश्यतु । सः एव स्वजीवने वेदान्तसंकल्पनां यथावत् कार्यान्वितं कृतवान् । महास्थानात् पतितः अपि सः परिस्थित्या प्रभावितःन अभवत् । कियत् आश्चर्यजनकः आत्मविश्वासः !''

ततः स्वामीजी तस्य चालकस्य गृहं गत्वा तस्य मनसि उत्पन्नं असीमं आनन्दं प्रकटितवान् ।

''कदापि आत्म विश्वासं न त्यक्तव्यम् ।''

தமிழமுது – நீர் விளையாடேல்

– எம். ஸ்ரீதர்,
நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

மனித வாழ்வில் நீருக்கென்று ஒரு மிக முக்கிய இடம் உண்டு. மனிதன் பிறக்கும் போதும் இந்த மண்ணை விட்டு பிரியும் போதும் நீருடன் தன்னுடைய பிறப்பையும் இறப்பையும் முடிக்கிறான். நீரின்றி அமையாது உலகு என்பது நூற்றுக்கு நூறு சரியான ஒரு கூற்று. மனித உடலில் எழுவது சதவிகிதம் நீர் உள்ளது. அந்த நீரே மனித உயிருக்கு அரணாக உள்ளது என்பதும் நாம் அனைவரும் அறிந்த உண்மையாகும்.

நீருக்கு ஒன்றல்ல ஓராயிரம் சிறப்புகள் உள்ளன. நீர் தான் சேரும் பொருளை ஒட்டி தன்னுடைய நிறத்தையும் அளவையும் உருவத்தையும் மாற்றிக் கொள்கிறது. நீர் மென்மையாகவும் இருக்கிறது அதுவே மலைகளையும் கூட தகர்த்து விடும் மகா சக்தியாக மாறிவிடுகிறது. நீரைப் போல ஒரு மனிதன் மாறிவிட்டால் அவன் தன் வாழ்வில் மிகப்பெரிய வெற்றியை காண்பான்.

நதியாக ஓடும் போதும் குளமாக இருக்கும் போதும் இன்னும் ஏரிகளாக குட்டைகளாக இருக்கும்போதும் நீரின் வேகத்தையோ, போக்கையோ, பலத்தையோ நம்மால் கணிக்க இயலாது. நன்கு பழகிய அல்லது நமக்குத் தெரிந்த இடங்களில் குளிப்பதோ நீரில் மூழ்கி நீச்சல் அடிப்பதோ நமக்கு நிச்சயம் ஆனந்தத்தையும் ஆரோக்கியத்தையும் தரும்.

ஆனால் அதுவே நமக்கு தெரியாத இடத்தில் நாம் குளிக்கவோ அல்லது விளையாடவோ தொடங்கினால் பல நேரங்களில் அது நம் இன்னுயிரை இழப்பதற்கான காரணமாகிவிடும். எனவே தான் அனைத்தையும் அன்பையும் அருளக்கூடிய ஔவையார் **நீர் விளையாடேல்** என்கிறார். எப்போதும் நாம் நமக்குத் தெரிந்த அல்லது நன்கு பழகிய இடங்களில் மட்டுமே நீரோடு விளையாட வேண்டும் தெரியாத இடத்தில் அதை செய்தோம் என்றால் உயிரை இழக்க நேரிடும்.

தொடரும்...

அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திரு அம்பர் மாகாளம்

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'
Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு

பரவின அடியவர் படுதுயர்
கெடுப்பவர் பரிவிலார்பால்
கரவினர் கனலன் வுருவினா
படுதலைப் பலிகொடேகும்
இரவினர் பகலெரி கானிடை
ஆடிய வேடர் பூணும்
அவினர் அரிவையோ டிருப்பிடம்
அம்பர்மா காளந்தானே.

- ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தப் பெருமான் அருளிய
3-ஆம் திருமுறைப் பாடல்

இந்திரபுரி, மாரபுரி என்றெல்லாம் சிறப்பிக்கப்படும் திருஅம்பர்மாகாளம் தற்போது ''கோயில் திருமாளம்'' என்று அழைக்கப்படுகிறது. காவிரிநதியின் தென்கரையில் அமைந்துள்ள தேவாரப் பாடல் பெற்ற தலங்களும் திரு அம்பர் மாகாளம் 55வது திருமுறைத் திருத்தலம் ஆகும்.

அருள் வரலாறு :

அம்பன், அம்பாசுரன் என்ற இரு அரக்கர்களை அழித்த பாவம் அகல, அன்னை ஸ்ரீ மாகாளி பூஜித்து அருள் பெற்ற தலம் என்பதால் இத்தலம் மாகாளம் எனப் பெயர் பெற்றது.

சோமயாகத்தில் சோமேசர் :

சோமாசிமாறர் என்ற நாயன்மார் அம்பர்மாகாளத்தில் அவதரித்தவர். ஸ்ரீ சுந்தரமூர்த்தி ஸ்வாமிகள் திருவாரூரில் இருந்த காலத்தில் தினமும் இவர் அவரது இருமல் நோய் குணமாக தூதுவளை கீரை கொடுத்து வந்தார். சுந்தரரது மனைவி பரவையாடும் தினமும் அதனைத் துவையலாக்கிச் சுந்தரருக்கு படைப்பார்.

ஒருநாள் சுந்தரர், ''யார் தினமும் இந்தத தூதுவளை கீரை தருவது ? அவரை நான் பார்க்கவேண்டும்'' என்று பரவையாரிடம் கூற, மறுநாள் சோமாசிமாறரைச் சுந்தரர் முன் அழைத்து வந்தார் பரவையார்.

சுந்தரரும், சோமாசிமாறரிடம் தங்களுக்கு என்ன வேண்டுமோ கேளுங்கள் என்றார். சோமாசிமாறரும், ஐயனே ! தாங்கள் சிவபெருமானின் தோழர். எனவே தாங்கள் நான் செய்துவரும் சோமயாகத்தில் சிவபெருமான் நேரடியாக வந்து அவிர்பாகம் பெற்று எம்மை ஆசீர்வதிக்கும்படி செய்யுங்கள் என்றார்.

சுந்தரரும் தியாகேசரிடம் சென்று சோமாசிமாறரின் விருப்பத்தைத் தெரிவித்தார். தியாகேசரும் நான் எந்த வடிவில் வேண்டுமானாலும் வருவேன். என்னை சோமாசிமாறர் அடையாளம் கண்டு அவிர்பாகம் தருவதாக இருந்தால் நான் அவரது சோமயாக வேள்விச்சாலைக்கு வருகிறேன் என்றார்.

இறைவனது செய்தியை சோமாசிமாறரிடம் சுந்தரர் தெரிவித்தார். சோமாசிமாறரும் அதற்கு இசைவு தெரிவித்தார்.

சோமாசிமாறரும் சோமயாகத்தைத் துவங்கினார். இப்பொழுது யாகம் முடிவுறும் வேளை. இறைவனுக்கு ஹவிர்பாகம் தரவேண்டிய தருணம்.

அதுசமயம் காண்பவர் அருவருக்கத் தக்கவண்ணம் அழுக்கான கந்தலாடை அணிந்த ஒருவர் தமது தோலில் இறந்த கன்றின் உடலை வைத்துக் கொண்டு நான்கு நாய்களுடன் ஒரு புலையன் யாகசாலை நோக்கி வந்தார், கூடவே கள் குடத்தைத் தலையில் வைத்துக்கொண்டு இரு சிறுவர்களுடன் அவரது மனைவி பின் தொடர்ந்து வந்தாள்.

இவர்களைப் பார்த்த மாத்திரத்திலேயே யாகம் செய்து வைத்துக் கொண்டிருந்த ரித்விக்குகள் பயந்து அலறியடித்து ஓடினர்.

ஆனால், சோமாசிமாறரோ புலையனே சிவபெருமான், அவருடன் உள்ள நான்கு நாய்களே நான்கு வேதங்கள், கள் குடம் தாங்கிய பெண்ணே ஸ்ரீ பார்வதி, இரண்டு சிறுவர்களே விநாயகரும் முருகரும் என்பதைக் கண்ட சோமாசிமாறர், அந்தப்

புலையனின் கால்களில் விழுந்து, ஐயனே ! தங்களது கருணையே கருணை. நான் உங்களை மட்டும்தான் அழைத்தேன். தாங்கள் குடும்பத்துடன் வந்து சிறப்பித்து அருளியமைக்கு நன்றி என்று கூறி, அவிர்பாகத்தை அந்தப் புலையன் கையில் கொடுத்தார்.

அதேநேரம் புலையன் உமாதேவி, கணபதி, முருகன் சமேதராக சிவபெருமானாக நிஜவடிவில் காட்சிதந்து அருளினார்.

சோமாசிமாறர் யாகம் செய்த அந்த இடம் அம்பர் மாகாளம் மற்றும் அம்பர் பெருங்கோயில் இரண்டிற்கும் இடையில் உள்ளது.

இந்திரபுரி :

ஒருசமயம் புலஸ்தியர் வழியில் தோன்றிய சம்ஹாரசீலன் என்பவனிடம் தோற்று, அவனுக்கு அஞ்சிய இந்திரன் இத்தலம் வந்து அடைக்கலம் புகுந்து ஆண்டவனை வேண்டினான். இறைவனும் பைரவ வடிவில் சம்ஹார சீலனைக் கொன்று தேவேந்திரனை மீண்டும் தேவலோக அதிபதியாக்கினார். இவ்வாறாக தேவேந்திரன் வந்து வழிபட்டு அருள்பெற்ற தலமானதால் இத்தலம் இந்திரபுரி என்றழைக்கப்பட்டது.

மாரபுரி :

ஒருமுறை தேவர்களால் ஏவப்பட்ட மன்மதன் தவத்தில் ஆழ்ந்திருந்த விஷ்வாமித்ரர் மீது மன்மதபாணங்களை வீசினான். இதனால் கோபமடைந்த விஷ்வாமித்ரர் மன்மதனை சபித்தார். சாபம் பெற்ற மன்மதன் இங்கு வந்து மாகாளநாதரை வணங்கி சாபம் நீங்கப்பெற்றான். இதனால் இத்தலம் மாரபுரி என்றும் அழைக்கப்பட்டது.

நாகதோஷம் நீங்க :

அஷ்ட நாகங்களில் ஒன்றான வாசுகி இத்தலம் வந்து மாகாளரை வணங்கித் தமது ப்ரம்மஹத்தி தோஷம் நீங்கப்பெற்றது. இத்தலத்தில் வாசுகிக்குத் தனிச் சன்னதி உள்ளது. ராகுதோஷம் உள்ளவர்கள், திருமணத் தடை உள்ளவர்கள் வெள்ளி மற்றும் ஞாயிறு கிழமைகளில் வாசுகிக்குப் பால் அபிஷேகம் செய்து தோஷம் அகலப்பெறுவது இன்றும் கண்கூடு.

சிறப்புக்கள் :

1. சோமாசிமாறர் அவதார மற்றும் முக்தித்தலம்.

2. அதிகார நந்தி மனித உருவில் அருள்கின்றார்.
3. சோழர் காலக் கல்வெட்டுகள் இவ்வாலயத்தில் உள்ளன.
4. மஹாவித்வான் சுந்தரம்பிள்ளை இத்திருக்கோயில் தலபுராணத்தை இயற்றிள்ளார்.
5. பாரத தேசத்தில் உள்ள மூன்று மாகாள க்ஷேத்ரங்களில் இதுவும் ஒன்று. மற்ற இரண்டு வடநாட்டில் உள்ள உஜ்ஜைனி மாகாளமும் தொண்டை நாட்டில் விழுப்புரம் அருகே உள்ள இரும்பை மாகாளமும் ஆகும்.
6. வைகாசி ஆயில்யத்தில் இங்கு சோமயாகப் பெருவிழா சிறப்பாக நடைபெறுகிறது.
7. மரண அவஸ்தையில் உள்ளவர்கள் இங்குள்ள மோக்ஷ லிங்கத்திற்கு அபிஷேகம் செய்து மன அமைதியும் ஆனந்தமும் பெறுகின்றனர்.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன்	:	ஸ்ரீ காலகண்டேஷ்வரர் (எ) மாகாள நாதர்
இறைவி	:	ஸ்ரீ பக்ஷயாம்பிகை (எ) ராஜமாதங்கி
தீர்த்தம்	:	மாகாள தீர்த்தம்
தலமரம்	:	கருங்காலி மரம் / மருதமரம்
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	:	மாகாள இருடியர், இந்திரன், மன்மதன், காளி, மன்மதன் முதலானோர்.

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தர் இத்தலத்து ஈசனின் சிறப்புக்களை பதிகங்களாக அருளியுள்ளார்.

தரிசன காலம் :

காலை 07.00 மணி - பகல் 12.00 மணி வரை

மாலை 05.00 மணி - இரவு 08.00 மணி வரை

தொடர்பு முகவரி :

ஸ்ரீ மாகாளேஷ்வரர் திருக்கோயில்,
அம்பர் மாகாளம்,
பூந்தோட்டம் அஞ்சல், நன்னிலம் வட்டம்,
திருவாரூர் மாவட்டம் - 609 503.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண் :

04366-294157 / 94427 66818

அமைவிடம் :

அம்பர்மாகாளம் எனப்படும் இந்த திவ்ய திருத்தலமானது திருவாரூர் மயிலாடுதுறை மார்க்கத்தில் திருவாரூரில் இருந்து சுமார் 25 கி.மீ. தொலைவில் பூந்தோட்டம் அருகே உள்ளது.

ஸ்ரீ பக்ஷயாம்பிகா ஸமேத

ஸ்ரீ மாகாளேஷ்பர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

Scan this QR code to follow
SHABARI BOOK SALES, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

Scan this QR code to follow
SHABARI SIKSHA SANSTHAN, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

இணைந்திடுங்கள்...
இணைத்திடுங்கள்
இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

Send MONEY ORDER or DD to
SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
PHONE : 9842765414

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1.	Place of Publication	:	Salem - 636 001
2.	Periodicity of its Publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	D. Sivakumar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4.	Publisher's Name	:	M. Sridhar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5.	Editor's Name	:	M. Venkateswaran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6.	Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.11.2025. **M. Sridhar**

Signature of the Publisher

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi In Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்

- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

Shabari Siksha Sansthan, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.

Posted at Salem HPO 636 001. November - 2025

Published on 5th November - 2025

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. :TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024 - 2026
Licenced to post without prepayment: TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें ।

அனைத்து கடித போக்குவரத்துகளிலும் தங்களுடைய உறுப்பினர் எண்ணை தவறாமல் குறிப்பிடவும்.

Please quote your subscription number in all correspondance.

If undelivered please return to
Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001

To

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

LEARNER'S DICTIONARY

1024 Pages

Just ₹420.00 Only

35,000 Words

தமக்காக ஒன்று !
பிறர்க்கு பரிசளிக்க மிகவும் நன்று !!

மூன்று மொழிகளின் முத்தான வார்த்தைகள்
முன்னேற்றம் தந்திடும் முத்தான வார்த்தைகள்
மூன்று மொழிகளில் புலமை வாய்ந்திட
முதல் வேலையாய் சபரியை வாங்கிடு
கற்போர்க்கு இது கலங்கரை விளக்கம்
கலைச்சொற்கள் மும்மொழியில் அடக்கம்
கற்போர்க்கு இது மிகவும் நன்று
கற்பிப்போர்க்கும் இதனால் பயன் உண்டு.

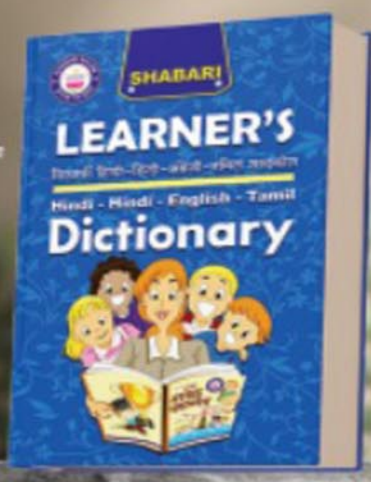

copies available at

SHABARI BOOK HOUSE

'Shabari Palace', 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.
WhatsApp : 94431-65414
Landline Phone : 94433-65414, 98427-65414
email : gandhijiqa@gmail.com visit us @ www.shabari.org